

॥ ओ३म् ॥

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र



वैदिक गर्जना

• वर्ष १६ • अंक ५ • मई २०१६

ज्येष्ठ आर्यसेवक गौरव समारोह-मार्च २०१६

-: चित्रमय झलकियां :-



‘ज्येष्ठ आर्यसेवक गौरव समारोह’ में मान्यवरों का सम्मान



समारोह के अध्यक्ष
पू. स्वामी
श्रद्धानन्दजी का
सम्मान करते हुए
सभा के उपप्रधान
श्री योगमुनिजी ।

मुख्य अतिथि
डॉ. श्री जनार्दनरावजी
बाघमारे (प्रसिद्ध
शिक्षाविद् तथा पूर्व सांसद)
का सम्मान करते हुए
सभामंत्री
श्री माधवरावजी
देशपांडे।



समारोह में
सम्मिलित
पूर्वविधायक श्री
शिवाजीरावजी
पाटील कव्हेकर का
सम्मान करते हुए
सभा के उपप्रधान
श्री राजेन्द्रजी दिवे ।





महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र



वैदिक गर्जना

सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,११७
दयानन्दाब्द १९३

कलि संवत् ५११७
वैशाख

विक्रम संवत् २०७३
मई २०१६

प्रधान सम्पादक
माधव के.देशपांडे
(९८२२२९५५४५)

मार्गदर्शक सम्पादक
डॉ.ब्रह्ममुनि
(९४२९९५१९०४)

सम्पादक
डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९४२९९५१९०४)

सहसम्पादक - प्रो.देवदत्त तुंगार, प्रो.ओमप्रकाश होलीकर,
प्रा.सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

* हिन्दी विभाग *

- | | | |
|----|--|----|
| १) | वैदिक पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ - निवेदन/फोटों के विवरण... | ४ |
| २) | हमारे आर्य विद्वान् क्या ? | ५ |
| ३) | ज्येष्ठ आर्यसेवक गौरव समारोह (रिपोर्ताज)..... | १२ |
| ४) | समर्पण व अर्थशुचिता (राठौरजी का मन्तव्य)..... | २१ |
| ५) | शोकसमाचार | २३ |

* मराठी विभाग *

- | | | |
|----|---|----|
| १) | मनु-उपदेश / दयानंदांची अमृतवाणी | २४ |
| २) | राज्यात मोठ्या प्रमाणावर पर्जन्यवृष्टी यज्ञ | २५ |
| ३) | पार्थिव देहाविषयीची कर्तव्यकर्म | २८ |

अ
नु
क्र
म

* प्रकाशक *

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३१५१५

* मुद्रक *

वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परली-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क

वार्षिक रु.१००/-

आजीवन रु.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

व्यापक स्तर पर वैदिक पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ - आत्मनिर्वेदन...

समाज व राष्ट्र के हितैषी, पर्यावरणप्रेमी एवं प्राणिमात्र का पूर्ण कल्याण चाहनेवाले आर्यसज्जनों ! बहनों और भाईयों !

आज सर्वत्र विशेषकर महाराष्ट्र के मराठवाडा में अकाल पडा हुआ है। पानी के लिए सारे लोग तरस रहे हैं। अनेकों किसान तथा मजदूर दिन-प्रतिदिन आत्महत्या कर रहे हैं। ऐसी प्रतिकूल अवस्था में महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभाने उदात्त भाव से अनेकों स्थानों पर 'वेदविज्ञान के आधार पर पर्जन्यवृष्टि महायज्ञों' का व्यापक स्तर पर आयोजन करने का निर्णय लिया है। आगामी दि. २७ जून से ३ जुलाई २०१६ के दौरान सम्भाजीनगर, धर्माबाद, देगलूर, परली, परभणी, किल्लेधारूर, उदगीर, लातूर, उमरगा, हिंगोली, माजलगाव, रेणापूर, शिवणखेड, सोलापूर आदि स्थानों पर पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ होंगे। इसके लिए पर्यावरण विशेषज्ञ डॉ. कमलनारायणजी आचार्य, डॉ. प्रद्युम्नजी शास्त्री, पं. सुरेंद्रपालजी आर्य, पं. शिवकुमार शास्त्री, पं. प्रियदत्तजी शास्त्री आदि विद्वानों व महाराष्ट्र के पंडितों को आमंत्रित किया है। इस व्यापक महायज्ञ अभियान में आर्यसमाज के साथ अन्य सामाजिक व धार्मिक संस्थानों, राजनेताओं, व्यापारियों तथा समाज के सभी घटकों को सम्मिलित करके इन यज्ञों को सफल बनाना। इसके लिए सभी की सहाय्यता आवश्यक है। अतः सभी से हार्दिक सहयोग की कामना !

*** विनीत - दयाराम बसैये (संयोजक व सदस्य, पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ समिति)**

- मुखपृष्ठ एवं मलपृष्ठ पर छपे चित्रों का विवरण -

१) स्वा.सै.कपिलमुनिजी गंजेवार का गौरव २) स्वा.सै.बलिरामजी पाटील का गौरव
 ३) स्वा.सै.आनंदमुनिजी(चिल्ले) का गौरव ४) श्री माणिकरावजी भोसले का गौरव ५) श्री हिरामनजी डोईजोडे का गौरव ६) श्री बद्रीनारायणजी तोष्णीवाल का गौरव ७) श्री बाबुरावजी तेकर का गौरव ८) आर्यश्रेष्ठी श्री कृष्णचंद्रजी आर्य का गौरव स्वीकारते हुए श्री माधवराव देशपांडे ९) स्व.बापुरावजी जगदाळे (मास्तर) का गौरव स्वीकारते हुए जगदाळे परिवार १०) स्वा.सै.(स्व.) पोशट्टी दादा उन्नतवार का गौरव स्वीकारते हुए उन्नतवार परिवार ११) पूर्व विधायक स्व.शालीग्रामजी बसैये बंधु का गौरव स्वीकार करते हुए श्री दयारामजी बसैये १२) स्व.शेठ रामपालजी लोहिया का गौरव स्वीकारते हुए लोहिया परिवार १३) श्री गुलाबचंदजी लदनिया का गौरव स्वीकारते हुए लदनिया परिवार १४) स्व.लेखराजजी आर्य का गौरव स्वीकारते हुए उनके पुत्र १५) स्व.रामचंद्ररावजी मोरे का गौरव स्वीकारते हुए मोरे परिवार १६) स्व.सखारामजी डुबे का गौरव ग्रहण करते हुए श्री अनिलजी भारुका व श्री उग्रसेनजी राठौर।

हमारे आर्य विद्वान् क्या

म.दयानंद व आर्य समाज को पौराणिक बनाना चाहते हैं ?

- डॉ.ब्रह्ममुनि (प्रधान,म.आ.प्र.सभा)

महर्षि स्वामी दयानन्द ने अपना संपूर्ण जीवन सच्चे शिव की खोज तथा मृत्यु पर विजय पाने और बाद में सत्य वेद ज्ञान के प्रचार व प्रसार के लिए लगाया। अपनी जिज्ञासाओं के स्थायी समाधान हेतु वे देशभर में घूमते रहे। इसके लिए उन्होंने अनेकों कष्ट उठाये। अंत में गुरु विरजानन्द जैसे तपस्वी वेदसूर्य के दर्शन पाकर उन्हें आंतरिक प्रश्नों के उत्तर मिले और उन्हीं के आदेशानुसार अपना सर्वस्व असत्य के खंडन व सत्य के मण्डन के लिए लगाया। मानवमात्र के दुःखनिवारण हेतु वेद और आर्षग्रंथों का शाश्वत सत्य ज्ञान बताने और अज्ञान, अंधःविश्वास दूर करने के लिए अपना सारा जीवन अर्पण किया। अनेकों प्रलोभनों को ठोकें मारी, किन्तु सत्य को कभी नहीं छोड़ा। मान-अपमान को एक समान समझकर उन्होंने लोकनिन्दा की कोई परवाह नहीं की। किसी प्रकार का स्वार्थ उन्होंने नहीं किया। लोकैषणा से वे सदैव दूर रहे। मानवमात्र के दुःख का मूल कारण अज्ञान, अविद्या, अंधःविश्वास और पोपलीलाएं हैं। इन्होंने

से सामान्य लोगों को मुक्ति दिलाने हेतु उन्होंने आजीवन प्रयत्न किया। वे एक सच्चे योगी, महान ऋषि व एक प्रामाणिक ईश्वरभक्त थे। ऋषि दयानंद एक वेदज्ञानी, सृष्टि वैज्ञानिक और दूरदर्शी दिव्यात्मा थे। जब आधुनिक वैज्ञानिकों को किसी भी बात का कुछ भी पता नहीं था, तब उस समय स्वामीजी ने सृष्टिविज्ञान का सत्य दुनिया के सामने रखा। उनकी दृष्टि समग्र, व्यापक व समन्वयात्मक रही। 'ईश्वर के सृष्टिनिर्माण व वेदज्ञान का उद्देश्य और उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सृष्टि की यह सारी व्यवस्था है', यह बात उन्होंने सबके सामने रखी। जिसके लिए सृष्टि का निर्माण हुआ, वह आत्मा और उसका कल्याण वेद की आज्ञाओं के अनुसार चलने में ही है और इसी में सारे संसार का कल्याण निहित है, इस बात का उन्हें पूर्णतः ज्ञान था। इसके लिए उन्होंने सत्य की परीक्षा की कसौटी बतायी थी। बुद्धि के ताले उन्होंने अपनी मेधाशक्ति द्वारा खोले थे।

ईश्वर जीव, प्रकृति, पदार्थ, धर्म

आदि सभी शब्दों के अर्थ और उसकी परीक्षा भी उन्होंने दी थी। महर्षि स्वामी दयानंद को केवल सत्य और सत्य ही स्वीकार्य था। सृष्टि के नियम तथा ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव उन्हें ज्ञात थे। वेद को उन्होंने स्वतः प्रमाण माना था। वेदज्ञान के अनुकूल आर्ष (ऋषिकृत) ग्रंथों को परतः प्रमाण माना तथा अन्य सभी ग्रंथों को मनुष्यकृत अनार्ष ग्रंथ सिद्ध किया था। इन मानवीय ग्रंथों में जो भी अच्छी बातें हैं, वे सभी वेदानुकूल होने से वह ज्ञान वेद का ही है और जो वेद के विरुद्ध है, उसे मनुष्यों ने अपनी बुद्धियों से उटपटांग लिखा है। इसलिए वह सभी त्याज्य है। आगे चलकर उन्होंने बताया कि, 'खीर कितनी भी मधुर और स्वादिष्ट हो और उसमें थोड़ा सा जहर मिला हो, तो जैसे वह पदार्थ त्यागने योग्य है, वैसे ही अनार्ष ग्रंथ त्याज्य हैं।' इसी कारण स्वामीजी ने सारे संसार को 'वेदों की और लौटो' यह संदेश दिया।

अनार्ष ग्रंथों के कारण ही संसार में अनेकों मत व पंथ बने हैं और ये सभी आपस में लड़ रहे हैं। हर एक पंथवादी अपने ही ग्रंथ को 'धर्मग्रंथ' सिद्ध कर रहा है। विवेक न होने से वह अपने ग्रंथ को पवित्र समझता है। ये पंथवादी लोग

उनके ग्रंथों के बारे में विरोध, शंका व प्रश्न करने ही नहीं देते। आज इन धर्मग्रंथों की संख्या अनेक हो गयी है। इन्हीं के कारण सम्प्रति वैचारिक व सैद्धांतिक एकता खत्म हो चुकी है। इसी तरह उन अनेकों मतपंथों के अनेकों धर्मगुरु बन गये। वे सभी वैचारिक दृष्टि से आपस में मतभिन्नता रखते हैं। इन गुरुओं को कोई भी प्रश्न या शंका नहीं कर सकता। प्रश्न करनेवालों को ही कड़ा दंड दिया जाता है और साथ ही उन्हें नास्तिक कहा जाता है। इसीलिए इन सभी धर्मग्रंथों व धर्मगुरुओं के सामने विचारों की स्वतंत्रता नहीं थी। गुरुमंत्र के बारे में भी इनमें एकता नहीं दिखाई देती। राजा-महाराजाओं पर भी इन्हीं गुरुओं को वर्चस्व था। ऐसे में दुनियां में वैदिक विचार व एक मत लाना यह एक बहुत ही कठिन काम था। तत्कालिन अंग्रेज सरकार की मेहरबानी रही है कि, उन्हीं के कारण इन लोगों के धर्मग्रंथों में विद्यमान वेदविरुद्ध असत्य बातें सामने लाई गयीं। पुराणों तथा बौद्ध, जैन, ईसाई व इस्लाम के ग्रंथों में जो-जो सत्य, न्याय, कल्याणकारक बातें हैं, वे सभी वेद की ही हैं तथा वेदानुकूल होने से ग्रहण करने योग्य हैं।

किंतु उन धर्मग्रंथों की जो असत्य, झूठी, वेदविरुद्ध व मनमानी बातें हैं, जिसके कारण मानवमात्र में संघर्ष व विभाजन हो सकता है और साथ ही मानवमात्र की अनेकों समस्याएँ बढ़ती हैं। स्वामीजी ने वे सभी बातें दुनिया के सामने उन्हीं के धर्मग्रंथों के प्रमाण देकर रखी। उस समय कोई नाराज होगा, इसकी परवाह उन्होंने कभी नहीं की। क्योंकि सत्य के बिना मानवमात्र का कल्याण हो ही नहीं सकता, यह उनका दृढ़ विचार था।

देखिए, ऋषि दयानंद की दूरदृष्टि! यदि वे पुराणों, कुराण व बाईबल आदि ग्रंथों में वेदों की बातें नहीं बताते थे, तो वे ग्रन्थ और भी दृढ़ हो जाते थे।

महर्षि दयानंद अपने 'ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका' ग्रंथ के विषय व ग्रंथ प्रमाण-अप्रमाण विषय में कहते हैं - 'इन ग्रंथों का तो पूर्वोक्त प्रकार से स्वतः सुनना और पढ़ना सबको उचित है। इनसे भिन्नो (अनार्षग्रंथों) का नहीं। क्योंकि जितने ग्रंथ पक्षपाती, क्षुद्रबुद्धि, कम विद्यावाले अधर्मात्मा, असत्यवादियों के कहे वेदार्थ से विरुद्ध और युक्तिप्रमाण रहित हैं, उनको स्वीकार करना योग्य नहीं।'

आगे वे भाष्यार्थ में लिखते हैं - "कदाचित् इन ग्रंथों के विषय में कोई ऐसा प्रश्न करे कि इन असत्य ग्रंथों में भी जो-जो सत्य बातें हैं, उनका ग्रहण करना चाहिए ? तब इसका उत्तर यह है कि - जैसे अमृततुल्य अन्न में विष मिला हो, तो उसको छोड़ देते हैं, क्योंकि उनसे सत्यग्रहण की आशा करने से सत्यार्थ प्रकाशक वेदादि ग्रंथों का लाभ हो जाता है, इसलिए इन सत्यग्रंथों के प्रचार के अर्थ उन मिथ्या ग्रंथों की अवश्य छोड़ देना चाहिये। क्योंकि विना सत्यविद्या के ज्ञान कहाँ? विना ज्ञान के उन्नति कैसी ? और उन्नति के न होने से मनुष्य सदा दुःखसागर ही में डूबे रहते हैं।"

इतना सबकुछ स्पष्ट बताकर स्वामीजी ने अनार्ष ग्रंथों की असत्य बातें छोड़कर सत्य बातें स्वीकार करने और उसी से कल्याण कर लेने की बात कही है।

उन्होंने वेदभाष्य भी सत्यार्थपरक और आत्मकल्याणपरक किये हैं। मानवमात्र को एक ही मत में, और वह भी सत्यमत में लाने तथा सबको सुखी करने के लिए सत्य व शाश्वत ज्ञान प्रदान करने के लिए वेद को मानने वालों के अज्ञान, 173

अंधःविश्वास और दुराग्रह के कारण संसार में अनेकों मत-मतांतर बनें और बढ़े हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती ने वेदों के सही अर्थ बताकर वेदों के नाम पर जो अज्ञान, जड़पूजा, मृतक श्राद्ध आदि बातें चल रही थी, उन्हें छोड़ने का आग्रह किया, तो भी उनके पश्चात् आज तक (१८७५-२०१६) कोई भी उन अंधःविश्वास आदि बातों को त्यागने के लिए तैयार नहीं है। हर एक का दुराग्रह जारी है। अज्ञान, अंधःविश्वास तथा पाखंड आदि बड़े पैमाने पर बढ़ रहे हैं। वेद को माननेवाले ही वेद की सत्य बातें न मानेंगे, जानेंगे और अपनाएंगे, तो बाकी मतपंथवाले क्यों और कैसे मानेंगे ?

अन्य मत पंथवाले भी अपना-अपना अज्ञान व अंधःविश्वास संभालते रहेंगे, तो फिर सत्यज्ञान कहाँ से प्राप्त होगा और कल्याण का मार्ग कैसे खुलेंगा ? सुख की प्राप्ति कैसी होगी ? और पक्षपात कैसे छूटेगा ? आपस के झगड़े कैसे समाप्त होंगे ? सभी में एकता कैसे स्थापित होगी ? संसार में शांति, सुरक्षा आदि बातें कैसे फैलेंगी ? महर्षि दयानंद को तो संसार के सभी मानवजाति को एकही प्राचीन वेदमत के अनुसार चलाना था। वैदिक ज्ञान के आधार पर ही

समग्र विश्व में सुख-शांति व एकात्मता स्थापित करनी थी। पक्षपातरहित, सत्यनीति, न्याय, धर्म तथा सुसंस्कार व मानवीय मूल्य आदि बातों के आचरण द्वारा सबका कल्याण करना था। इसीलिए उन्होंने अनार्ष ग्रंथों को त्यागते हुए केवल आर्ष ज्ञान-विज्ञान को ही प्रमाण माना और उसी का ही प्रतिपादन किया। संसार के कल्याण की पूर्णतः यही सत्य बात है।

स्वामीजी ने सभी मानवमात्र पर वेदज्ञान के प्रचार व प्रसार के माध्यम से दया व उपकार किया है। सत्य और हित तथा असत्य और अहित ये दोनों बातें सबके सामने रख दी। दुर्भाग्य से अब तक दयानंद का नाम न लेते हुए धर्मग्रंथों में परिवर्तन किया जा रहा है। आर्ष ग्रंथों में अनार्ष बातें मिलाने का प्रयास जारी है। व्याख्याएँ भी बदली जा रही है, फिर भी सभी लोग अपने धर्मग्रंथों को छोड़कर वेदमत में नहीं आ रहे हैं। उनमें हठधर्मिता बढ़ रही है। वे सभी दुर्हठ कर रहे हैं। बहुत सारे जिज्ञासु व विवेकी लोग वेद मत में आ गये हैं, किन्तु दुःख का विषय है कि हमारे ही कुछ विद्वान् दयानंद के सत्य सिद्धांतों को छोड़कर अपना ही विचार चला रहे हैं।

आज बहुत सारे विद्वान् लोगों को खुश करने के लिए तथा अपने क्षुद्र स्वार्थ के लिए महर्षि दयानंद एवं आर्य समाज का ही नाम लेकर सत्य वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध लिख रहे हैं। ऐसे ही व्याख्यान भी दे रहे हैं। इससे स्पष्ट होता है कि उनकी स्वयं की तपस्या कम हो गयी है।

। कुछ विद्वान् पौराणिक गणेश, मोदक,

चूहा आदि की वैदिक और आध्यात्मिक व्याख्याएँ करते हुए अनिष्ट बातों को प्रतिष्ठित करना चाह रहे हैं।

शिव(शंकर)-पार्वती, डमरु आदि को भी वेद का आधार देकर प्रतिष्ठित कर रहे हैं। नवरात्रि उत्सव भी वेद के सिद्धान्तानुसार हैं, ऐसा सिद्ध करना चाह रहे हैं।

मूर्तिपूजा करनेवालों के साथ संगनमत करके देवी-देवताओं के सम्मुख आर्यसमाजी पंडित यज्ञ कर रहे हैं और करा भी रहे हैं।

पुराणों में वेद और विज्ञान की बातें बताकर वे पुराणों की प्रतिष्ठा बढ़ा रहे हैं। सभी मत पंथवादी अपनी-अपनी विधियों व कुरीतियों को

आधुनिक विज्ञान सम्मत बताने की होड़ में लगे हैं। अर्वाचिन संत साहित्य में भी वेद की बातें बताकर उस साहित्य को बढ़ावा दे रहे हैं।

संत ज्ञानेश्वर, संत तुकाराम, गुरुनानक, कबीर, सूरदास,

तुलसीदास, सूफी संत आदि सभी को महर्षि दयानंद के समान ही बता रहे हैं।

संत रामदास के दासबोध ग्रंथ में वेदज्ञान व भागवत पुराण में वैदिक सिद्धान्त बताकर उनके अनुयायियों की सहानुभूति प्राप्त करने का हमारे वैदिक विद्वानों का प्रयास जारी है।

वैदिक भागवत कथा, वैदिक

सत्यनारायण कथा, वैदिक होलीपर्व,

वैदिक सीमोल्लंघन, वैदिक कीर्तन

आदि-आदि नाम देकर आर्षविद्या को

दूषित कराने का और पोपलीलाएँ चलाने

का इनका भारी प्रयास जारी है। समर्थ

रामदास को महर्षि दयानंद के समान

ऋषि बताना, इन दोनों का जीवन

एकसमान बताना और 'दासबोध' तथा

'सत्यार्थप्रकाश' इन दो ग्रंथों की समानता

को प्रदर्शित करना, क्या यह समुचित

न्याय है ? यह तो एक प्रकार से स्वयं

को ऋषि दयानंद का अनुयायी बताकर

धोका देना है। कुछ लोग ऋषि दयानंद

की मूर्तियाँ बनवाकर बेच रहे हैं और

अपना खासा धंदा तेजी से चला रहे हैं।

क्या यह भी दयानंद व आर्यसमाज के

प्रति न्याय है ? यह तो दुनियाँ व

आर्यजगत् की आँखों में धूल फेकने जैसा

है। क्योंकि महर्षि दयानंदने जिन बातों

का घोर खंडन किया और मूर्तिपूजा आदि गोत्र की परंपरा तो बाद में ऋषियों के के साथ कभी भी समझोता नहीं किया, नाम पर शुरु हुई, किंतु उसमें भी आज उन्हीं को बढ़ाने का प्रयास थे तथाकथित के जैसी जाति-प्रथा नहीं थी ।' ये विद्वान् जाति-प्रथा को दयानंद के विरुद्ध मानते आर्यजन कर रहे हैं व सामान्य आर्यजनों हैं और सगोत्र विवाह नहीं होने चाहिए, को दिग्भ्रमित कर रहे है । ऐसा कहते हैं । यह कितनी आश्चर्य की बात है ?

महर्षि दयानंद ने अन्य ग्रहों पर भी आर्य समाज के विद्वान ही मनुष्य के निवास होने की बात लिखी आजकल अन्य मतों का खंडन न करने थी, इस बात पर भी विद्वान् लोग हंस की बात कर रहे हैं । यदि ऐसा ऐसा है, रहें थे और उनका उपहास कर भी रहे थे तो फिर सत्यार्थ प्रकाश के अंतिम ११ से । अब आधुनिक विज्ञान मंगल व चंद्र १४ तक के चार समुल्लासों को वहाँ से आदि ग्रहों तक पहुँचा और वहाँ पर हटा दो या फिर उसमें भी मनमाने संशोधन जल का अस्तित्व बता रहा है और वहाँ पर मानव की वस्ती करने का सोच रहा करो ? और इन समुल्लासों को लिखने है । तब इस विषय में एक विद्वान लिखता है - 'ऋषि दयानन्द कोई वैज्ञानिक व का ऋषि का उद्देश्य क्या था ? आजकल खगोलशास्त्रज्ञ नहीं थे, उन्होंने केवल के विद्वान् बतावें । इस प्रकार की अनेकों संस्कृत का उद्धरण देकर उसका भाष्य बातें, जो कि गलत हैं, उनका समर्थन किया था ।' क्या यह भी दयानंद के करके, उन्हें वेद का आधार देकर प्रतिष्ठित साथ अन्याय नहीं है ? महर्षि दयानंद करना, यह अत्यंत दुखदायी विषय है । तो योगी थे और ईश्वर के साथ साक्षात्कार अज्ञान, अंध:विश्वास, अश्रद्धा और अन्य करके उन्होंने सृष्टि के विज्ञान को जाना बुरी परंपराएँ दूर करने तथा सभी को एक था । ही वैदिक विचारों की छत्रछाया में लाकर उन्हें एक सत्य मतवादी बनाकर संसार

सगोत्र और विजातीय विवाह के बारे में भी आजकल के विद्वान् महर्षि को सुखी, शांतमय तथा आनंदी बनाना, दयानंद के नाम पर अपना अज्ञान व यही स्वामीजी का उद्देश्य था । दुर्भाग्य से अंध:विश्वास चला रहे हैं । स्वामीजी आज के विद्वान इसके विपरीत चल रहे कहते हैं- 'प्रारंभ में गोत्र थे ही नहीं । हैं । इन्हीं विद्वानों का आज भी जातिवाद

आज भी खत्म नहीं हुआ है। अपनी बिरादरी से हटकर ये लोग दूर नहीं गये और ऐसे ही लोगों के वे नेता बनाना चाहते हैं तथा धन, नाम व यश कमाना चाहते हैं। कुछ योग के प्रचारक विद्वान भी महर्षि दयानंद के साथ मूर्तिपूजक, अज्ञानी व अंधःविश्वासी लोगों को भी योगी बता रहे हैं। पुराण, बाईबल आदि पंथवादी भी अपने को वेदानुकूल बताने का प्रयास कर रहे हैं। बौद्ध, जैन भी इसी तरह स्वयं को वेदानुकूल बताते रहेंगे, तो मानवजाति सत्य से सदैव दूर ही रहेगी और इससे किसी का भी कल्याण नहीं होगा।

महर्षि दयानंद से पहले सभी ग्रन्थ अनार्ष थे। उन्हीं का सर्वत्र वर्चस्व था और उनका निर्माण करनेवाले तथा अनुयायी इन सभी ने विश्व को एक करने के लिए सत्य बात नहीं बतायी तथा वेद का योग्य अर्थ भी नहीं बताया। उस समय वेदशास्त्र के नामपर सब कुछ गलत चल रहा था, तब भी किसी ने सत्य और असत्य क्या है ? यह सिद्ध नहीं किया, किन्तु महर्षि स्वामी दयानंद ने ही इस बात को संसार के सामने रखा।

महर्षि दयानंद से ईमानदारी रखना चाहते हो, तो पुराण, कुरान, बाईबल, जैन, बौद्ध, चारवाक आदि ग्रन्थों में विद्यमान झूठी और वेद व सृष्टिविज्ञान विरोधी बातें स्पष्ट रूप से बताएँगे, तो ही संसार में एक वेदमत ही सर्वत्र स्थापित होगा। महर्षि दयानंद के विचारों को अपनाकर उन्हीं के विरोध में लिखने का दुस्साहस कोई भी विद्वान् न करें और अपने आचार्य के साथ कृतघ्नता का व्यवहार कृपया न करें। ज्ञानेश्वरी, तुकाराम गाथा, दासबोध, भागवत आदि ग्रंथों में जो वेदविरुद्ध बातें हैं, उन्हें जाने व संसार के सामने बतावे।

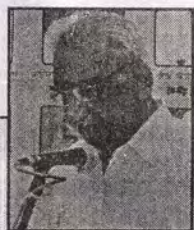
महर्षि दयानंद सरस्वती ने पक्षपातरहित, सत्य, न्याय, धर्म और सब के सर्वकल्याण व सुख की बातें बताई हैं। वेदपथ पर ही सभी को चलने का आदेश उन्होंने दिया है। किंतु हमारे विद्वान इसके विरुद्ध आचरण करते हुए जनसामान्यों में भ्रम फैला रहे हैं। यह महती वेदना का विषय है।

- आर्यसमाज, परली-बैजनाथ जि.बीड

चलभाष-१४२०९५१९०४

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में लातूर में सम्पन्न हुआ ज्येष्ठ आर्यसेवकों का ऐतिहासिक गौरव समारोह

प्रसिद्ध विचारक डॉ.वाघमारेजी ने किया आर्यसेवियों का सम्मान ।
लगभग २७ लाख रुपयों की गौरवराशि संकलित
सभा में स्थापित होगी गौरव स्थिरनिधियाँ



डॉ.जनार्दनरावजी वाघमारे का प्रेरक उद्बोधन -

- * आर्यसमाज मेरी संस्कार शाला ।
- * समाज परिवर्तन के लिए नई लड़ाई लडनी होगी ।
- * मूर्ति पूजा व जातिप्रथा-निर्मूलन के लिए नया आन्दोलन हो ।
- * युवाओं के निर्माण के लिए अग्रक्रम देवें ।
- * दयानन्दजी को अभिप्रेत वेदाधिष्ठित आदर्श समाज की स्थापना हो।

‘सहस्रों वर्षों के घोर अंधःकारमय युग को चीरकर विशुद्ध वेदज्ञान के प्रकाश से समग्र विश्व को आलोकित करनेवाले क्रांतिकारी युगपुरुष महर्षि दयानंद सही अर्थों में मानवमात्र के उर्जास्थान रहें । उन्हीं के कारण संसार को शाश्वत सुख व शान्ति की उपलब्धि हुई और स्वाभिमान से जीने का रास्ता मिला, हम उनका गौरवगान किन शब्दों में करें ? मेरे लिए तो स्वामीजी अखंड प्रेरणास्त्रोत रहे हैं तथा उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज मेरी संस्कारशाला रही है।’ ये विचार थे सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् तथा महर्षि दयानंद के परम अनुयायी पूर्व सांसद एवं पूर्व उपकुलपति डॉ.जनार्दनरावजी वाघमारे के !

तत्वावधान में तथा राज्य की विविध आर्य समाजों के सहयोग से लातूर में दि.२६ मार्च २०१६ को ‘सोलह ज्येष्ठ आर्यसेवक गौरव समारोह’ उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ । इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ.श्री.वाघमारे बोल रहे थे । समारोह की अध्यक्षता आर्यजगत् के तपस्वी संन्यासी एवं अनेकों छात्रों के नवनिर्माता पूज्य स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती ने की । इस अवसर पर वैदिक विद्वान प्रो.डॉ.दीनदयालजी वेदालंकार (गुरुकुल कांगड़ी वि.वि.,हरिद्वार), लातूर के पूर्वविधायक श्री शिवाजीराव पाटील कव्हेकर, प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं.भूपेन्द्रसिंहजी आर्य(अजमेर), सभा के प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी, मंत्री माधवरावजी

देशपांडे, उपप्रधान श्री दयारामजी बसैये,

योगमुनिजी, राजेंद्र दिवे, उपमंत्री प्रा.देवदत्त तुंगार, शंकरराव बिराजदार, कोषाध्यक्ष उग्रसेन राठौर, पुस्तकाध्यक्ष प्रो.ओमप्रकाशजी होलीकर, वेदप्रचार अधिष्ठाता श्री लक्ष्मणराव आर्य, आर्य समाज गांधी चौक-लातूर के पदाधिकारी, १६ गौरवमूर्ति व उनके परिवार के सदस्य तथा उन-उन आर्यसमाजों के पदाधिकारी आदि उपस्थित थे ।

अपने प्रेरक व अभ्यासपूर्ण मार्गदर्शनपर भाषण में मुख्य वक्ता डॉ.श्री वाघमारेजी ने महर्षि दयानंद के जीवन चरित्र, उनके विचार, आर्य समाज के ऐतिहासिक कार्य और वर्तमान में वैदिक विचारों की आवश्यकता तथा कार्यकत्ताओं द्वारा अपेक्षित कार्ययोजनायें आदि विषयों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। उनके विचार काफी प्रेरणाप्रद रहें।

अपनी छात्रावस्था में वे आर्यसमाज लातूर के साथ कैसे जुड़े रहे ? इस विषय पर कुछ संस्मरण सुनाये । उन्होंने कहा - 'यह स्थान (आर्यसमाज, गांधी चौक) मेरे लिए अत्यंत निकटतम व स्नेहशील रहा है। यहाँ से मैंने बहुत कुछ सिखा है । इसलिए मेरे लिए यह जगह संस्कारशाला ही है । पूज्य उत्तममुनिजी ने हमें बहुत

कुछ सिखाया । राजस्थान विद्यालय में पढते समय हमें इसी पवित्र स्थान से जीवन मूल्यों का पाठ सीखने मिला । यहाँ पर हमने अनेकों ओजस्वी व्याख्यान सुने और आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा मिली। इसी संस्था के अनेकों आर्य क्रांतिकारियों ने घरबार छोड़कर देश और राष्ट्र के लिए अपना जीवन दीया, ऐसे महान तपस्वी लोगों का सान्निध्य मिला, यह हमारा सदभाग्य है।'

स्वामी दयानंद के संबंध में उन्होंने कहा - 'स्वामीजी के जीवन व कार्यों से अनेकों को स्फूर्ति मिलती है। वे अनेकों के प्रेरणास्त्रोत रहे हैं । जीवनभर संघर्ष करते हुए स्वामीजी सत्यज्ञान तलाश में सारा भारत देश घुमते रहें । अंत में प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानंद के दर्शन हुए और सही अर्थों में उन्हें नवदिशा मिली। वेदज्ञान को पाकर स्वामीजी का जीवन धन्य हो गया और गुरु की आज्ञा पाकर वे वेद के प्रचार हेतु चल पड़े । स्वामीजी राष्ट्रीय स्वाभिमान व राष्ट्रीय चेतना को जगानेवाले युगपुरुष थे । आर्य समाज के रूप में उन्होंने विश्व में नवसुधार लाने हेतु एक व्यापक संस्था प्रदान की । जिसके माध्यम से अनेक आर्यजन वेदप्रचार कार्य में संलग्न रहे। महाराष्ट्र के महादेव

गोविंद रानडे (लोकहितवादी) सही अर्थों में स्वामीजी के विचारों के पुरस्कर्ता थे। इन्हीं के आग्रह से स्वामीजी पुणे में आये। वहाँ पर ऐतिहासिक व्याख्यान दिए। यह नगरी उस समय सनातनियों का गढ़ मानी जाती थी। जब पुणे शहर में स्वामीजी का जुलूस निकाला गया, तब सनातनी लोग गडबडी फैलायेंगे, यह जानकर म.फुले अपने वैचारिक मतभेद होते हुए भी जुलूस में शामिल हुए। यह एक तरह से दो समाजसेवियों के मध्य का ऐतिहासिक परस्पर सौहार्दभाव रहा है।

आर्य समाज के ऐतिहासिक कार्यों पर दृष्टि डालते हुए डॉ.श्री वाघमारेजी ने कहा - 'आर्यसमाज ने केवल धार्मिक क्षेत्र में सुधार कार्य नहीं किए, अपितु राष्ट्रीय एवं सामाजिक सुधार हेतु भी बहुत बड़ा योगदान दिया है। मराठवाडा भूमि पर निजाम का राज्य था, उस समय आर्य समाज के क्रांतिकारियों ने मातृभूमि की रक्षा के लिए प्राणपन से लड़ाई लड़ी। राजनैतिक स्वतंत्रता की अपेक्षा आर्यसमाज अंध:विश्वासों व कुरीतियों को दूर करने हेतु सामाजिक सुधार में विश्वास रखता था। इसी कारण राजनीति से यह समाज दूर रहा।'

आर्यसमाज की वर्तमान दशा पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा - 'आज अनेकों गांव में पुराने जमाने से आर्यसमाजें विद्यमान हैं। लातूर, उदगीर, हिंगोली, गुंजोटी आदि स्थानों पर बहुत काम हुआ है। किन्तु आर्य समाजें आजकल समाजसेवा व वेदप्रचार कार्य के अपने उद्देश्य से दूर होती जा रही हैं। संध्या व यज्ञ से आगे बढ़कर हमें सामाजिक कार्यक्रमों में भी आगे आना चाहिए। आज राजनीति में जातिवाद बहुत पैमाने पर बढ़ रहा है और धार्मिक क्षेत्र में मूर्तिपूजा अत्यधिक मात्रा में बढ़ रही है। इसलिए आर्यसमाजों ने जातिव्यवस्था को नष्ट करने के लिए तथा पंथ व जातियों के दीवारों को तोड़ने के लिए आगे आना चाहिए। इस दृष्टि से श्री माणिकरावजी भोसले 'अंतरजातीय विवाह मंडल' के माध्यम से उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं। इसी जाति व्यवस्था ने समाज में हलबली मचा रखी है। जातिपंचायतें अपना क्रूरतम चेहरा दिखा रही हैं। इसके साथ ही मूर्तिपूजा ने भी बहुत बड़ा अनर्थ खड़ा कर रखा है। मठ-मंदिरों में पुजारियों ने मूर्तिपूजा व अंधश्रद्धा के माध्यम से एक तरह से समांतर व्यवस्था ही स्थापन की है। सबसे अधिक भ्रष्टाचार तो इन्हीं मंदिरों में

चलनेवाली मूर्तिपूजा के द्वारा हो रहा है ।
अतः आर्य समाज ने मूर्तिपूजा व
जातिप्रथा निवारण के लिए व्यापक
एकसूत्री कार्यक्रम चलाना चाहिए ।

समाज परिवर्तन के लिए जो कुछ
अच्छा किया जा सकता है, इन कार्यक्रमों
का आरंभ 'स्व' से होना चाहिए । साथ
ही युवाओं को आकर्षित करने के लिए
विशेष कार्यक्रम शुरू करने चाहिए । इस
दृष्टि से महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा बहुत
सक्रिय नजर आ रही है । आज का गौरव
समारोह एक तरह से नवपरिवर्तन की
धारा प्रवाहित करने हेतु ऐतिहासिक सिद्ध
होगा ।

इस समारोह में प्रो.डॉ.दीनदयालजी
वेदांगकार ने भी अपने मौलिक विचार
व्यक्त किये । सभा के माध्यम से होनेवाले
समाजोपयोगी उपक्रमों की उन्होंने भूरी-
भूरी प्रशंसा की ।

आरंभ में गौरव समिति के सदस्यों
द्वारा शॉल, पुष्पहार एवं सन्मानचिन्ह प्रदान
कर मान्यवर अतिथियों का सम्मान किया
गया । सभा के प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी ने अपने
प्रास्ताविक भाषण में गौरव समारोह के
औचित्य पर प्रकाश डाला । उन्होंने कहा
- 'आर्य समाज के विचार उसके तपस्वी

व कर्मठ कार्यकर्ताओं के कारण जीवित हैं
। पुराने जमाने के आर्यजन भले ही कम
पढ़े-लिखे थे, किंतु वैदिक विचारों को
आचरण में लाकर उन्होंने एक आदर्श
आर्यसमाजी के रूप में समाज के सामने
अपना आदर्श रखा था । वैदिक सिद्धान्तों
का पालन करने में वे आगे रहे । वैदिक
धर्म के प्रचार-प्रसार में उनकी भूमिका
सराहणीय रही है । परोपकार, दान,
आर्यसमाज की सेवा, वेदप्रचार आदि के
लिए सहयोग व सामाजिक कार्य के माध्यम
से उन्होंने अपने व्यक्तित्व की छाप समाजपर
छोड़ी थी । इसी कारण वे गौरव के पात्र हैं
और रहेंगे । सभा ने ऐसे ज्येष्ठ आर्यसेवकों
के गौरव समारोह का आयोजन कर उनके
कार्यक्रमों से उन्नत होने का अल्पसा प्रयत्न
इसके माध्यम से किया है । जिन आर्य
कार्यकर्ताओं गौरवराशियों के संकलन में
योगदान दिया वे धन्यवाद के पात्र हैं । मैं
इस समारोह में पधारे हुए सभी गौरवमूर्तियों,
सन्माननीय अतिथियों व विद्वानों का
अभिनंदन करता हूँ ।'

इस अवसर पर सभामंत्री श्री माधवराव
देशपांडेजी, उपप्रधान श्री दयारामजी बसैये
ने भी अपने विचार रखे । पूर्व विधायक
श्री शिवाजीराव कव्हेकर ने कहा -

‘आर्यसमाज की प्रेरणा से ही हम काम करते हैं। यहाँ पर माँगने के नहीं, बल्कि देने के ही काम होते हैं। भारतीय संस्कृति के पावन मूल्यों को बढ़ाने में आर्यसमाज बहुत सक्रिय है, जहाँ तक हो सके, इसमें सहयोग देते रहेंगे।’ उन्होंने स्मरण दिलाया कि, आचार्य देवव्रतजी का सान्निध्य पाकर हमें योगप्रसार आदि कार्यों में अवसर प्राप्त हुआ।

इस ऐतिहासिक समारोह में १६ गौरवमूर्तियों का श्री वाघमारेजी के करकमलों से शॉल, पुष्पहार, गौरवचिन्ह, सन्मानपत्र व श्रीफल प्रदान कर गौरव किया गया, जिनमें जीवित नौ आर्यसेवकों ने स्वयं उपस्थित रहकर अपना गौरव स्वीकार किया, अन्य दिवंगतों के गौरव उनके परिवारजनों ने ग्रहण किये।

१६ ज्येष्ठ आर्य सेवकों का गौरव -

१) स्वा. सै. कपिलमुनिजी (तुकारामपंतजी गंजेवार- धर्माबाद) के गौरव में उनके साथ पुत्र रमाकांत गंजेवार एवम् भतीजे श्री नरेन्द्रजी गंजेवार उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री कपिलमुनिजी ने अपने गौरव का सारा श्रेय आर्य समाज को दिया। उन्होंने कहा- ‘जब तक जीवन है, तब तक आर्यसमाज का काम करते

रहेंगे, महर्षि दयानंद के पदचिन्हों पर चलते रहेंगे और वेदप्रचार को बढ़ाते रहेंगे।’ इनके सन्मान में रु. २लाख की राशि प्रदान की गयी। समारोह में आर्यसमाज धर्माबाद के मंत्री श्री सुरेश चिंतावार, पूर्वनगराध्यक्ष विश्वनाथराव पाटील, राम मोतेवार आदि सम्मिलित हुए।

२) पुणे के आर्यश्रेष्ठी श्री कृष्णचंद्रजी आर्य (पिंपरी) अपनी अस्वस्थता के कारण समारोह में नहीं आ सके। अतः उनका सम्मान पुणे से पधारे श्री माधवराव देशपांडे ने स्वीकार किया। गौरव में प्राप्त रु. १लाख की राशि एवं सन्मानचिन्ह आदि उन्हें प्रदान किए गए।

३) हिंगोली के कर्मठ आर्यसेवक श्री गुलाबचन्द्रजी लदनिया अपनी वृद्धावस्था के कारण समारोह में पहुँच नहीं पाये। उनका यह सम्मान उनके सुपुत्र श्री संतोष व पुत्रवधू सौ. अनिता लदनिया तथा पौत्र चि. आदित्य ने स्वीकार किया।

४) हिंगोली के दिवंगत ज्येष्ठ आर्यसेवक श्री सखारामजी डुबेवार का मरणोत्तर गौरव दयानंद एज्युकेशन सोसायटी, हिंगोली के सचिव श्री अनिलजी भारुका ने स्वीकारा। डुबेवार परिवार में विवाह समारोह होने के कारण उनके सदस्य समारोह में नहीं आये।

५) स्व.श्री.लेखराजजी आर्य (धुलिया) (हदगांव) ने अपना सम्मान गौरवपत्र, का मरणोत्तर गौरव उनके सुपुत्र श्री संजीव पुष्पहार, स्मृतिचिन्ह आदियों के माध्यम आर्य और दौहित्र चि.विकास पोपली ने से किया गया। अपने गौरव के उत्तर में श्री ग्रहण किया। इस अवसर पर धुलिया तोष्णीवालजी ने कहा - आर्यसमाज के आर्यसमाज के ज्येष्ठ कार्यकर्ता श्री विचार हमें यदि न मिलते, तो सही अर्थों योगमुनिजी उपस्थित थे। में शाश्वत ज्ञान न प्राप्त होता और जीने

६) पूर्वविधायक स्व.श्री.शालिग्रामजी का रास्ता न मिलता। इस अवसर पर बसैये बन्धू का मरणोत्तर गौरव उनके अनुज उनकी कन्या सौ.मंगला व दामाद श्री एवं सभा के प्रधान श्री दयारामजी बसैये बालकिशनजी बजाज, कन्याएँ बंधु ने ग्रहण किया। इस अवसर पर सौ.राजकुमारी लोहिया, सौ.डॉ.सुनीता आर्यसमाज सम्भाजीनगर के कोषाध्यक्ष डोईबळे, तीनों सुपुत्र अॅड.शरद, अॅड.जोगेंद्रसिंह चौहान उपस्थित थे। श्री अॅड.गोपाल व नीलेश(सी.ए.) तथा बहुएँ दयारामजी अपने बड़े भाई के कार्यों की और आर्यसमाज के प्रधान श्री शेषराव शिंदे चर्चा करते हुए भावविभोर हो उठे। उन्होंने व मंत्री प्रभाकरराव देशमुख उपस्थित थे। आर्यसमाज के लिए जो कुछ किया जा ९) प्रसिद्ध कर्मठ आर्य कार्यकर्ता सके, उसके लिए तत्परता अभिव्यक्त की। स्व.बापुरावजी जगदाले मास्तर

७) स्वा.सै.(स्व.) पोशट्टी दादा (धाराशिव) का मरणोत्तर गौरव उनकी उनग्रतवार (देगलूर) का मरणोत्तर गौरव धर्मपत्नी श्रीमती शांताबाई, कन्या स्वीकार करने के लिए उनकी धर्मपत्नी सौ.प्रभावती श्रीधर गंभीरे, सौ.सविता माता श्रीमती सरस्वतीबाई, सुपुत्र विजयजी, मुरलीधर घुले, पुत्र दिनकरराव जगदाळे, कन्या सौ.संध्या, पौत्री डॉ.अपूर्वा तथा पौत्र संदीप व वैभव तथा बहुएँ सौ.दमयंती, आर्यसमाज देगलूर के कोषाध्यक्ष प्रा.अभय महानंदा आदियों ने स्वीकार किया। इस कळसकर आदि आगे आये। इस अवसर अवसर पर आर्यसमाज के प्रधान श्रीमती पर डॉ.अपूर्वा ने अपने दादाजी के अधूरे शशिकला घोगरे, मंत्री विजय बंग, सदस्य सपनों को साकार करने का संकल्प दोहराया। प्राचार्य वेदमुनिजी, निपाणीकर आदि

८) श्री बट्टीनारायणजी तोष्णीवाल उपस्थित थे।

१०) निलंगा के स्वा.सै.एवं कट्टर श्री डॉ.प्रकाशजी कच्छवा इस अवसर पर
आर्यसमाजी श्री बलिरामजी पाटील का उपस्थित थे ।

सम्मान भी इस अवसर पर किया गया । १२) करडखेल ता.उदगीर के गौरवमूर्ति
अपने सम्मान के उपलक्ष्य में उन्होंने कहा स्वा.सै.आनंदमुनिजी (मन्मथअप्पा
- 'आर्यसमाज अज्ञान, अन्याय व अभाव चिल्ले) ने अपने गौरव के उपलक्ष्य में
को दूर करने के लिए अहर्निश प्रयत्न करता विचार व्यक्त किए । उन्होंने कहा -
है ।' इस अवसर पर श्री पाटीलजी की 'आर्यसमाज ने राष्ट्रीय, सामाजिक व
सहधर्मचारिणी सौ.शांताबाई, सुपुत्र अजित व्यक्तिगत उन्नति में बहुत बड़ा योगदान
पाटील, संतोष पाटील, कन्या विमल दिया है।' इस अवसर पर उनकी धर्मपत्नी
बेंगाळे, दामाद देवेन्द्रजी, पुत्रवधू सौ.पद्मा, सौ.आशा, दौहित्रियाँ सौ.सरोज गंडाळे,
सौ.सुनिता बिराजदार, पौत्री कु.सुरभि, पौत्र सौ.कलावतीबाई, पुत्र प्रभुअप्पा, कन्या
चि.सौरभ, प्रपौत्री योगिता आदि उपस्थित महानंदा डिगे, शिल्पा कडगे, पौत्र विशाल,
थे। दौहित्र महादेव, उद्धव तथा आर्य समाज के
प्रधान शिवाजीराव देशपांडे, कोषाध्यक्ष
वीरभद्र गुरुजी आदि उपस्थित थे ।

११) औराद शहाजानी के वयोवृद्ध आर्य १३) परली के दानशूर दिवंगत
कार्यकर्ता श्री हिरामनजी डोईजोडे का आर्यसेवक स्व.सेठ श्री रामपालजी
गौरव सम्मानपूर्वक किया गया। इस अवसर लोहिया का मरणोत्तर गौरव उनके पुत्र श्री
पर श्री डोईजोडे अपने विचार व्यक्त करते जुगलकिशोरजी व नंदकिशोरजी लोहिया,
हुए दुखी हो गए और कुछ कह नहीं पाये। कन्या सौ.रेखा एवं दामाद श्रीकिशनजी
इस गौरव में उनकी धर्मपत्नी सौ.निलाबाई, पल्लोड ने ग्रहण किया । इस अवसर पर
कन्या सौ.अरुणाबाई, श्रीमती कमुबाई, जुगलकिशोर लोहिया ने कहा कि, 'हमारे
बहण श्रीमती सुमित्राबाई, दामाद श्री पिताजी को आर्यसमाज के कारण सत्पथ
अरुणजी, पुत्र श्री चंद्रकांत, श्री विनोद, पर चलने की प्रेरणा मिली । हम भी भविष्य
पुत्रवधू सौ.मीरा, सौ.साधना, पौत्री में उन्ही के पदचिन्हों पर चलते हुए
सौ.श्रद्धा, पौत्र अनुप, राजेंद्र आदि आर्यसमाज को पूरा सहयोग देते रहेंगे ।'
सम्मिलित हुए । आर्यसमाज के वरिष्ठ सदस्य इस अवसर पर आर्यसमाज परली के मंत्री

श्री उग्रसेनजी राठौर, उपप्रधान श्री आर्यसेवी श्री माणिकरावजी भोसले लक्ष्मणराव आर्य, तथा डॉ.ब्रह्ममुनिजी (पिताजी) का गौरव श्री डॉ.वाघमारेजी आदि उपस्थित थे। द्वारा किया गया। इस अवसरपर उनके सुपुत्र १४) बोटकूळ ता.निलंगा के दिवंगत, योगेश भोसले, बहु सौ.अमरजा, पौत्री कर्मठ आर्य कार्यकर्ता श्री रामचंद्ररावजी कु.अवनी तथा दोनों कन्या व दामाद एवम् मोरे का सन्मान उनके परिवार के सुपुत्र भाई तथा आर्यसमाज रामनगर के मंत्री श्री सर्वश्री शंकरराव, देवदत्त, विनायकराव ज्ञानकुमारजी आर्य, प्रधान शंकरराव मोरे, एवम् रामरतन तथा बहुएँ सौ.शकुंतला कोषाध्यक्ष राजेन्द्र दिवे आदि उपस्थित थे। देवी,सौ.कमलबाई, सौ.उषादेवी तथा १६) लातूर के कर्मठ आर्य कार्यकर्ता व सौ.सुमनबाई तथा पौत्र व पौत्रियों ने यज्ञप्रेमी श्री बाबुरावजी तेरकर का गौरव स्वीकारा । इस सुअवसर पर वहाँ की भी इस अवसर पर गौरव किया गया । आर्यसमाज के प्रधान श्री किशनराव पाटील इस अवसर पर उनके पुत्र श्री ज्ञानेश्वर, व मंत्री बाबुराव मोरे उपस्थित थे । बहु सौ.स्मिता एवम् पौत्री कु.सारिका तेरकर १५) अन्तरजातीय विवाह मंडल का कार्य उपस्थित थे। बडी निष्ठा के साथ करनेवाले प्रसिद्ध

१६ ज्येष्ठ आर्यसेवकों के गौरव में संकलित गौरवराशियाँ निम्नप्रकार से हैं

- १) स्वा.सै.श्री कपिलमुनिजी (गंजेवार) - आर्यसमाज, धर्माबाद - रु.२,००,०००/-
- २) श्री कृष्णचंद्रजी आर्य - आर्यसमाज, पिंपरी पुणे - रु.१,००,०००/-
- ३) श्री गुलाबचंदजी लदनिया - आर्यसमाज, हिंगोली - रु.३,०१,०००/-
- ४) स्वा.सै.स्व.सखारामजी डुबेवार - आर्यसमाज, हिंगोली - रु.१,००,०००/-
- ५) स्व.श्री.लेखराजजी आर्य - आर्यसमाज, धुलिया - रु.१,०१,१११/-
- ६) स्व.शालिग्रामजी बसैये बंधु - आर्यसमाज, संभाजीनगर - रु.१,५१,०००/-
- ७) स्वा.सै.स्व.पोशडीदादा उन्नतवार - आर्यसमाज, देगलूर - रु.१,५१,०००/-
- ८) श्री बद्रीनारायणजी तोष्णीवाल - आर्यसमाज, हादगांव - रु.१,०५,१००/-
- ९) स्व.श्री.बापुरावजी जगदाळे मास्तर - आर्यसमाज, उस्मानाबाद - रु.१,००,०००/-
- १०) स्वा.सै.श्री.बळीरामजी पाटील - आर्यसमाज, निलंगा - रु.१,००,०००/-
- ११) श्री हिरामनजी डोईजोडे - आर्यसमाज, औराद श. - रु.१,००,०००/-

- १२) स्वा.सै.श्री आनंदमुनिजी(चिल्ले)-आर्यसमाज, करडखेल - रु.१,००,०००/-
 १३) स्व.सेठ श्री रामपालजी लोहिया - आर्यसमाज, परली-वै.- रु.५,००,०००/-
 १४) स्व.श्री रामचंद्ररावजी मोरे - आर्यसमाज, बोटकूळ - रु.३,०५,०००/-
 १५) श्री माणिकरावजी भोसले - आर्यसमाज, रामनगर, लातूर - रु.३,५०,०००/-
 १६) श्री बाबुरावजी तेरकर- आर्यसमाज, गांधी चौक, लातूर - रु.१,००,०००/-

सभी गौरवमूर्तियों ने अपने गौरव में प्राप्त गौरवराशियों में अपनी ओर से कुछ राशि मिलाकर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा को वेदप्रचार आदि कार्यों के लिए समर्पित की। सभा इन सभी गौरवमूर्तियों के नाम से स्थिरनिधियों की स्थापना कर उनके ब्याज से वैदिक धर्म का प्रचार कार्य करती रहेगी।

कुलमिलाकर यह समारोह काफी सफल रहा। कार्यक्रम में दूर-दृष्टी से पधारे आर्यजन

भारी संख्या में उपस्थित थे। समारोह का संचालन डॉ.नयनकुमार आचार्य तथा धन्यवाद प्रस्ताव सभामंत्री श्री माधवरावजी देशपांडे ने रखा। शान्तिपाठ द्वारा कार्यक्रम की समाप्ति हुई। आर्यसमाज गांधीचौक लातूर के पदाधिकारियों ने सभी श्रोताओं की भोजन की व्यवस्था उत्तम प्रकार से की।

-: प्रस्तुति :-

डॉ.नयनकुमार आचार्य

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभांतर्गत आर्यसमाज परली द्वारा संचालित, **श्रद्धानंद गुरुकुल महाविद्यालय, परली-वै.**

*** प्रवेश सूचना ***

आप सभी को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभांतर्गत आर्य समाज परली द्वारा संचालित 'स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल महाविद्यालय' में दि.१५ जून २०१६ से पांचवी कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को छठी कक्षा में प्रवेश दिये जा रहे हैं। परली शहर के वैद्यनाथ मंदिर से २ कि.मी. दूरी पर सुरम्य पर्वतीय प्रदेश में विमान इस शिक्षास्थली में महर्षि दयानन्द आर्य विद्यापीठ, झज्जर (रोहतक) से संलग्न आर्य पाठ्यक्रम चलाया जाता है, जिसमें वेद, व्याकरण, संस्कृत साहित्य के साथ ही अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, गणित, विज्ञान आदि विषयों का तज्ज्ञ अध्यापकों के साग्नित्य में अध्यापन होता है। गरीब, अनाथ व होनहार छात्रों को निःशुल्क प्रवेश दिया जाएगा। अतः अपने बच्चों को सुसंस्कारित कराने व वेदानुयायी बनाने हेतु प्रवेश दिलावें।

सम्पर्क - आचार्य प्रवीण (८८५५०८०६३२) विज्ञानमुनि (९९७५३७५७११)

दिनीत

जुगलकिशोर लोहिया
 (प्रधान)

उग्रसेन राठौर
 (मंत्री)

प्रभुलाल गोहिल
 (कोषाध्यक्ष)

आर्य समाज, परली-वैजनाथ जि.बीड

समर्पण व अर्थशुचिता ही महाराष्ट्र सभा की पहचान

सभा कोषाध्यक्ष उग्रसेनजी राठौर का मन्तव्य

गत १८-१९ वर्षों से महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा अपने प्रभावशाली उपक्रमों के माध्यम से वैदिक धर्म के प्रसार व प्रसार कार्य में संलग्न है। अपने अप्रतिम कार्यविधियों के कारण यह सभा समस्त भारतवर्ष में एक 'क्रियाशील प्रान्तीय सभा' के नाम से सुपरिचित हो गयी है।

महाराष्ट्र प्रान्तीय सभा के निःस्वार्थी व समर्पित पदाधिकारियों ने बड़ी कर्मठता के साथ अर्थशुचिता को अपनाकर सभाविभिन्न उपक्रमों द्वारा जहाँ वेदप्रचारादि कार्यों को गति दी है, वहीं उसकी प्रतिष्ठा को भी बढ़ाया है। सभा की बैठक हो, सम्मेलन हो या कोईभी कार्यक्रम हो सभी पदाधिकारी सभा से खर्चा न लेते हुए अपने निजी खर्चों से प्रवास तथा निवासादि की व्यवस्था करते हैं। अर्थशुचिता व समर्पण के इस उच्च आदर्श की यह एक अनूठी मिसाल है, जब कि प्रायः अन्य संगठनों में धन के व्यय पर नियन्त्रण रहता ही नहीं है।

कोई भी कार्य हो, उसके लिए धन की आवश्यकता होती है। वेदप्रचार या सामाजिक कार्य करने के प्रस्ताव जब भी सभा के सम्मुख आते हैं, तब धन की समस्या खड़ी होना स्वाभाविक है। इन कार्यों को पूर्ण करने के लिए सभा के

कर्मशील प्रदान डॉ. ब्रह्ममुनिजी की दूरदर्शिता बहुत काम आती है। इसके लिए वे अपनी व्यापक कल्पनाशक्ति का प्रयोग करते हैं, जो कि सबके लिए हितकारी सिद्ध होती है।

अपने पूर्वज महापुरुषों, क्रान्तिकारकों व आर्यसेवियों का गौरव करने से जहाँ उनके प्रति सम्मान को प्रकट करना सिद्ध होता है, वहीं उनके नामपर गौरव स्थिरनिधियाँ स्थापित करने से सभा अपने उपक्रमों का कुशलतापूर्वक संचालन भी कर सकती है। अर्थात् गौरव के पीछे केवल धनसंकलन का ही उद्देश्य नहीं है, तो उनके प्रेरक जीवन व कार्यों का गौरव करना है।

कई लोग यह कहते दिखाई देते हैं कि 'स्थिरनिधियों की आवश्यकता ही क्या है? आजकल बैंकों के व्याजदर भी कम हो रहे हैं और भविष्य में सभा के पदों पर न जानें कैसे (स्वार्थी व मतलबी) लोग आसीन होंगे? और धनसंग्रह करने से भविष्य में उसके संरक्षण का भी भय उपस्थित हो सकता है। अतः दान लेते रहे और खर्च करते रहें आदि... आदि...।'

लेकिन यह कोई दूरदर्शितावाली बात नहीं है। क्योंकि हमें निरन्तर वेदप्रचार करना है, अनवरत काम करने के लिए

बार-बार धन कौन देगा ? बैंकींग ब्याजदर सम्पन्न हुआ । इनमें से कई दिवंगत हुए, तो कम होने पर भी जितनी ब्याजराशि मिलती कुछ इस समय जीवित रहकर अन्यो को हो उसमें ही क्यों न सही उन-उन प्रेरणा दे रहे हैं । सोलह जगह की आर्य उद्देश्यानुसार कार्य होता रहेगा । इसके लिए समाजों के पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं तथा सभा ने स्थिरनिधि स्थापन करते समय भी गौरवमूर्तियों के परिवारजनों ने मिलकर बहुत कठोर नियम बांध रखे हैं । जिसे जिज्ञासु परिश्रम के साथ गौरवनिधियाँ संकलित की लोग जानकर हमारे कार्यों का महत्त्व समझ । समय कम था और सभा के पदाधिकारी सकते हैं । आगामी पदाधिकारियों को भी भी जादा घूम नहीं पाये । फिर भी स्थानिक इन्हीं नियमों के अनुसार काम करने होंगे आर्यजनों के प्रयत्नों से गौरवराशियाँ बड़े । अच्छे कार्यकर्ताओं के निर्माण की प्रक्रिया पैमाने पर इकट्ठी हुई और लातूर का गौरव जारी रहने से अच्छे पदाधिकारी भी मिलते समारोह बहुत ही उत्साह के साथ सम्पन्न रहेंगे, इस दृष्टि से हम काफी आशावादी हैं हुआ । हर एक गौरवमूर्ति की निधि कम से कम १ लाख और अधिक से अधिक ५ लाख रुपये की रही । यह सब सभा के वर्षभर चलने वाले कार्यक्रमों को देखकर आज तक के ऐतिहासिक व प्रेरक आर्य जगत् के विद्वान् तथा वेदप्रचारक काफी गतिविधियों का सुपरिणाम था । भविष्य में प्रभावित हैं । उन्हीं के मुख से हमने महाराष्ट्र भी प्रांतीय सभा इसी तरह से विभिन्न स्थानों सभा के प्रशंसा के उद्गार सुने हैं । हम के ज्येष्ठ आर्यसेवकों, स्वतंत्रता सैनानियों बड़ी नम्रता के साथ यह कहना चाहते हैं, गुरुकुल के पुराने स्नातक-स्नातिकाओं, कि, सबसे अधिक हमने समर्पण, त्याग व सामाजिक कार्यकर्ताओं के गौरव में अर्थशुचिता का ध्यान रखा है । सभा के स्थिरनिधियाँ संकलित कर उनका गौरव क्रियाशील व प्रखर सिद्धान्तनिष्ठ कर्मठ करना चाहती है । अतः आर्यजनों से निवेदन कार्यकर्ता भी हमारी सही पहचान है । हम है कि, अपनी पूर्वज आर्य विभूतियों के जो भी आजतक कर पाये और भविष्य में सम्मान में गौरव स्थिर निधियों की स्थापना करेंगे, वह सब इन्हीं विचारों के प्रभाव हेतु आगे आये और भविष्य में वेदप्रचारकार्य के अपने उद्देश्य को सफल बनाने हेतु संगठित कारण ! होकर प्रयत्न करें !

गत मार्च माह में प्रांतीय सभा द्वारा राज्य के १६ कर्मठ तपस्वी ज्येष्ठ आर्य सेवकों का गौरव समारोह उत्साहपूर्वक

—सौरभस्मृति, विद्यानगर, परली—वै.

चलभाष - १४२२२४१८४७

शोक समाचार लगनशील कार्यकर्ता सुभाषजी सुत्रावे चल बसे !



कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा के वेदप्रचारमन्त्री एवं आर्यसमाज बसवकल्याण के वरिष्ठ सक्रिय कार्यकर्ता श्री

रहें। इसी समाज के प्रधानपद को भी उन्होंने विभूषित किया था। इन्हीं के सत्प्रयासों से अनेकों नये कार्यकर्ता आर्यसमाज से जुड़ते रहें। कुछ वर्ष पहले आर्यसमाज के नये भवन का शिलान्यास योगगुरु स्वामी रामदेवजी के करकमलों से कराकर विशेष समारोह का सफलतापूर्वक आयोजन हुआ था, इसके नियोजन का सारा श्रेय स्व.श्री सुत्रावेजी को ही जाता है। रात-दिन एक कर आर्यसमाज के प्रचार व प्रसार की चिन्ता करनेवाले एक होनहार आर्य कार्यकर्ता के चले जाने का गहरा दुःख स्थानिक आर्यों को हमेशा के लिए कष्ट देता रहेगा। दिवंगत श्री सुत्रावे के पार्थिवपर प्रान्तीय सभा के प्रधान श्री सुभाषजी आष्टीकर के पौरोहित्य में पूर्ण वैदिक पद्धति से अन्तिम संस्कार कराया गया। शोकसभा दि.८ मई को सम्पन्न हुई। इसमें प्रान्तीय सभा के पदाधिकारी एवं बसवकल्याण परिसर के आर्यजन सम्मिलित हुए।

सुभाषजी सुत्रावे का दि.२५ अप्रैल २०१६ को प्रातः ९.३० बजे दिल का दौरा पड़ने से दुःखद निधन हुआ। उनके इस आकस्मिक देहावसान से कर्नाटक आर्य जगत् की काफी हानि हुई है। मृत्यु के समय उनकी आयु ६२ वर्ष की थी। वे अपने पश्चात् पत्नी, दो पुत्र, दो कन्याएं, बहुएं तथा पौत्र-पौत्रियों का विशाल परिवार छोड़कर विदा हुए।

स्व.श्री सुत्रावे एक लगनशील, जुझारु, कर्तव्यतत्पर व कर्मठ आर्य कार्यकर्ता थे। कर्नाटक में जगह-जगह पर वेदप्रचार समारोह, बच्चे-बच्चियों के संस्कार शिविर तथा सभा-सम्मेलनादि के आयोजन की गतिविधियों को बढ़ाने में वे सदैव तत्पर

वैजनाथराव मारमपल्ले का निधन

आर्यसमाज नान्देड के निष्ठावान् आर्य कार्यकर्ता श्री वैजनाथराव (वेदप्रकाश) मारमपल्ले का गत माह दुःखद निधन हुआ। वे ७७ वर्ष के थे। उनके पश्चात् पत्नी गंगाबाई, पुत्र-कन्या आदि परिवार है। स्व.श्री.मारमपल्ले वैदिक विचारों में आस्था रखनेवाले वरिष्ठ आर्यसमाजी थे। पिछले काफी दिनों से वे बीमार ही चल रहे थे।

श्रद्धांजलि समारोह में सर्वश्री नारायणराव कुलकर्णी, सत्येंद्र चिंचोलीकर, संभाजी किरकन, यादव भांगे, प्राचार्य देवदत्त तुंगार, डॉ.शारदा तुंगार, विनायक तांदले आदियों ने श्रद्धासुमन अर्पित किये। सभा के प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी तथा मंत्री श्री माधवरावजी देशपाण्डे ने शोकसंतप्त परिजनों से मिलकर अपनी शोकसंवेदनाएँ प्रदान की।

आर्यसमाज नान्देड में आयोजित

दिवंगत आत्माओं को भावपूर्ण श्रद्धांजली!

॥ओ३म्॥

माझा मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेही पैजेसीं जीके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ॥ (-संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

मनु-उपदेश

ब्राह्मण कसे बनता येते ?

स्वाध्यायेन जपैर्होमैस्त्रैविद्येनेज्यया सुतैः ।

महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः ॥ (मनु.२/२८)

अध्ययन-अध्यापन, विचार करणे व करविणे, नानाविध होमांची अनुष्ठाने, संपूर्ण वेदांचे शब्द, अर्थ, संबंध, स्वरोच्चारण यांसह शिकणे-शिकविणे, पौर्णमासी, इष्टि वगैरे करणे, पूर्वी सांगितल्याप्रमाणे विधिपूर्वक प्रजोत्पादन करणे, ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, वैश्वदेवयज्ञ आणि अतिथियज्ञ, अग्निष्टोमादी यज्ञ, विद्वानांचा सत्संग, सत्कार, सत्यभाषण, परोपकारादी सत्कर्म करणे, संपूर्ण शिल्पाविद्यादी शिकणे, दुराचार सोडून सदाचार करणे, या आचारांच्या योगाने हे शरीर ब्राह्मण वर्णाचे केले जाते.

दयानंदांची अमृतवाणी

आर्य समाजामुळेच सर्व कल्याण !

या देशाची उन्नती व्हावी, असे तुम्हाला वाटत असेल तर तुम्ही 'आर्यसमाजा'शी सहकार्य करून त्याच्या उद्दिष्टानुसार आचरण करण्यास सुरुवात करा. नाहीतर तुम्ही कांहीही करू शकणार नाही. कारण तुम्ही व आम्ही मिळून देशोद्धाराचे काम केले पाहिजे. ज्या देशातील पदार्थांनी तुमची-आमची शरीरे बनली आहेत, आज त्यांचे पालनपोषण होत आहे व यापुढेही होणार आहे. त्यांचे आपण सर्व मिळून तन-मन-धनाने प्रेमाने उन्नती करू या! आर्यावर्ताची उन्नती करण्यास आर्यसमाज जसा समर्थ आहे, तसा दुसरा कोणताही समाज, संस्था अथवा संघटना असूच शकत नाही. या समाजाला तुम्ही यथोचित साह्य कराल, तर फार चांगली गोष्ट होईल. कारण समाजाला भाग्यशाली बनविणे हे समुदायाचे काम असते. ते एकट्या दुकट्याचे काम नसते.

(सत्यार्थप्रकाश-११ वा समुल्लास)

प्रांतीय सभेच्या वतीने व्यापक स्वरूपात राज्यात पर्जन्यवृष्टी यज्ञाचे आयोजन

यज्ञ समितीची स्थापना, एकाच वेळी विविध ठिकाणी यज्ञ

२७ जून ते ३ जुलै दरम्यान होणार यज्ञ

सध्या सर्वत्र पाण्याची गंभीर आयोजन करण्याचे ठरले आहे. या समस्या उद्भवल्यामुळे प्राणिमात्रांसमोर यज्ञाच्या यशस्वी आयोजनाकरिता जीवन मरणाचा प्रश्न उभा आहे. राज्यपातळीवर 'पर्जन्यवृष्टी यज्ञ समिती'ची स्थापना करण्यात आली निसर्गनियमांचे उल्लंघन होऊन प्रचंड असून संयोजकपदी सभेचे उपप्रधान दयाराम बसैये यांची सर्वानुमते निवड प्रमाणात प्रदुषण वाढले व पर्यावरण करण्यात आली. तसेच सचिवपदी धोक्यात आले आहे. परिणामी अलीकडे अॅड.जोगेंद्रसिंह चौहान, कोषाध्यक्षपदी काही वर्षांपासून पाऊसच होत नाही. करण्यात आली. उग्रसेन राठौर व सहसंयोजकपदी यामुळे सततच दुष्काळाचे सावट आहे. चिंतावर व सुरेश गंजेवार यांची नियुक्ती यामुळे आता जगणे अवघड झाले आहे. यज्ञाचे आयोजन अशा गंभीर परिस्थितीचा विचार करून करण्यात आली. महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेने राज्यातील विशेषतः मराठवाड्यातील विविध ठिकाणी एकाच कालावधीत भव्य पडल्याने सर्वत्र पाण्याची गंभीर समस्या स्वरूपात पर्जन्यवृष्टी यज्ञाचे आयोजन निर्माण झाली आहे. कोरडा दुष्काळ करण्याचे निश्चित केले आहे. पडल्याने प्राणिमात्रांना जगणे असह्य झाले आहे. भीषण दुष्काळी परिस्थितीमुळे शेती पिकत नाही. सततचा दुष्काळ, या संदर्भात प्रांतीय सभेची दि.२ नापीकी, धन-धान्याचा अभाव, आर्थिक मे २०१६ रोजी परळी येथे बैठक संपन्न टंचाईमुळे कर्जबाजारीपणा, तसेच झाली. सभेचे प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी कुटुंबाचे पालन-पोषण, मुला-मुलींचे यांच्या अध्यक्षतेखाली झालेल्या या शिक्षण व विवाह व जनावरांसाठी चारा मात करण्यासाठी व्यापक चर्चा झाली. यांकरिता पैशाची तरतूद नसल्याने याकरिता मोठ्या प्रमाणात वैदिक शेतकरी, शेतमजूर, दररोज आत्महत्या विज्ञानावर आधारित पर्जन्यवृष्टी यज्ञाचे शेतकरी, शेतमजूर, दररोज आत्महत्या

करुन आपले जीवनच संपवित आहे. तर त्याहीपेक्षा बिकट समस्या पिण्याची पाण्याची आहे. खेडोपाड्यात, बाया-पोरे घागरभर पाण्याच्या शोधात रानोमाळ भटकत आहेत. विहीरी, तलाव कधीच आटले आहेत. अनेक बोअर्स आटून गेले आहेत. जे कांही चालतात, त्यांचीही पातळी खूपच खोल गेल्याने आता पाणी मिळणे अवघड झाले.

पाण्याअभावी ग्रामीण किंवा शहरी भागातील नळ योजना बंद पडल्याने टँकरद्वारे पाण्याची तुटपूंजी व्यवस्था झाल्याने दिसते. तर खाजगी टँकरवाल्यांचा धंदा तेजीत आहे. एकूणच पाण्याच्या दुर्भिक्षामुळे माणसांचे जगणे असह्य झाले आहे. अशा परिस्थितीवर मात करण्यासाठी आज कोणाकडेच उपाय नाहीत. सर्वजण वरुणदेवतेकडे आस लाऊन बसले आहेत. तर शासन विविध पद्धतीने भविष्यातील पाण्याच्या संरक्षण व संवर्धनाचे नियोजन करीत आहे. त्याकरिता अनेक सामाजिक व स्वयंसेवी संघटना आर्थिक निधी व इतरांच्या माध्यमाने सहकार्यासाठी सज्ज झाल्या आहेत. पण समस्येच्या मूलभूत उपायांकडे कोणाचेही लक्ष जात नाही. अशा गंभीर परिस्थितीवर प्रभावी उपाय

जर कोणाकडे असेल तर तो म्हणजे 'आर्यसमाज'. वेदविज्ञानावर आधारित 'पर्जन्यवृष्टी यज्ञाचे' आयोजन करुन मोठ्या प्रमाणावर पाऊस पाडण्याचे सामर्थ्य केवळ आर्य समाजाकडे आहे. म्हणूनच आता वेळ आली आहे, ती जागे होण्याची ! याकरिता सर्वांना सामावून घेऊन मोठ्या प्रमाणावर यज्ञाचे आयोजन करण्याचा निर्णय महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेने घेतला आहे.

बैठकीची सुरुवात ईश्वरस्तुति प्रार्थना उपासना मंत्रांनी झाली. सभेचे मंत्री श्री माधवरावजी देशपांडे यांनी केलेल्या प्रास्ताविकातून आपली भूमिका स्पष्ट केली. यावेळी ते म्हणाले- 'जेव्हा-जेव्हा देश व समाजात राष्ट्रीय, सामाजिक समस्या व दैविक प्रश्न उभे राहतात. तेव्हा त्या आव्हानांना तोंड देण्यासाठी आर्य समाज सर्व शक्तिनिशी तत्पर होतो. आज संपूर्ण महाराष्ट्रात अनावृष्टीमुळे दुष्काळ व पाण्याची ज्वलंत समस्या उभी आहे, म्हणून सभेने व्यापक स्तरावर पर्जन्यवृष्टीयज्ञांच्या आयोजनासाठी चर्चा व्हावी व याबाबत निर्णय व्हावा. याकरिता या बैठकीचे आयोजन केले आहे.'

तदनंतर झालेल्या चर्चेत सभेचे प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी, उपप्रधान श्री

दयारामजी बसैये, राजेंद्र दिवे, कोषाध्यक्ष उग्रसेनजी राठौर, वेदप्रचार अधिष्ठाता लक्ष्मणराव आर्य, अंतरंग सदस्य ज्ञानकुमारजी आर्य, जुगलकिशोरजी लोहिया, विजय उन्नतवार, प्रा.अभय कळमकर, यादवराव भांगे, अॅड.जोगेन्द्रसिंहजी चौहान आदींनी भाग घेतला. बैठकीत ठरल्याप्रमाणे आगामी दि.२७ जून ते ३ जुलै २०१६ या सात दिवसांच्या कालावधीत संभाजीनगर (औरंगाबाद), धर्माबाद, देगलूर, परळी, परभणी, किल्लेधारूर, उदगीर, लातूर, उमरगा, सोलापूर, रेणापूर या अकरा ठिकाणी विशाल स्वरूपात पर्जन्यवृष्टी यज्ञ करण्याचे निश्चित झाले. तसेच जिल्हा, तालुका व ग्रामपातळीवर ही वरील कालावधीतच मध्यम व छोट्या स्वरूपात यज्ञाचे आयोजन होईल.

सभेचे प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिर्जींनी पर्जन्यवृष्टी यज्ञाच्या सफलतेसाठी मोठा पुरुषार्थ करण्याचे आवाहन केले. ते म्हणाले - 'एकेकाळी आर्य समाजाने राष्ट्ररक्षणासाठी बलिदान दिले आहे. हैद्राबादच्या निजामी राजवटीला संपविण्यासाठी मोठे योगदान दिले. आताही चोहीकडे पाण्याचे दुर्भिक्ष उभे आहे. याप्रसंगी आर्य समाजाचे कर्तृत्व

यज्ञाच्या माध्यमाने सिद्ध करण्याची वेळ आली आहे. हे सर्वात मोठे परोपकाराचे व प्राणिमात्राच्या रक्षणाचे कार्य आहे. घरोघरी जाऊन यज्ञासाठी तूप, सामग्री, समिधा मागवून सर्वांना यज्ञात सहभागी करून घ्यावे. ठरलेल्या कालावधीत चोहीकडे यज्ञाचा सुगंध दरवळला पाहिजे. वयोवृद्ध मुनिवृंदांनी व कार्यकर्त्यांनी यज्ञस्थळी जाऊन अनुष्ठानाला बसले पाहिजे. या यज्ञाकरिता बेंगलोरहून आर्यवैज्ञानिक श्री शिवराजजी धरणे यांच्यासह त्यांचा संघ यज्ञाच्या परिक्षणासाठी येणार आहे. सर्वांनी ही जबाबदारी आपल्या घरातील समारंभ समजून पार पाडावी.'

संयोजक श्री दयाराम बसैये यांनी ठिकठिकाणी होणाऱ्या वृष्टी यज्ञासाठी आचार्य व विद्वान मंडळींनी वेळ द्यावा, तसेच कार्यकर्त्यांनी मोठ्या प्रमाणात कार्यास लागावे, असे आवाहन केले. शेवटी मंत्री श्री माधवराव देशपांडे यांनी आभार मानले.



पार्थिव(मृत) देहाविषयीची कर्तव्यकर्म-एक विवेचन

— ज्ञानकुमार आर्य

अंत्येष्टिसंस्कार हा मानवी विचारांना मानणारा व त्यानुसार जीवन शरीरावर केला जाणारा शेवटचा जगणारा समाज आहे. परंतू 'हिंदू' या (सोळावा) संस्कार आहे. 'अंत्य' नावाने जगणारे जे पौराणिक, सनातनी, म्हणजेच शेवटचा व 'इष्टि' म्हणजे यज्ञ, सांप्रदायिक मत-पंथ आहेत, ते जातिभेद, अर्थात् मृत शरीर भस्म होण्यासाठी केला अंधश्रद्धा, अनिष्ट चालीरीती, रुढी-जाणारा यज्ञ. यासच नरमेध, परंपरा, अवतारवाद इत्यादींना मानणारे व पुरुषमेध, नरयाग, पुरुषयाग असे मूर्तिपूजा, श्राद्ध-तर्पण, सत्यनारायण, म्हणतात. 'निषेकादि स्मशानान्तो अभिषेक, प्राणप्रतिष्ठा इत्यादी निरर्थक मन्त्रैर्यस्योदितो विधिः।' (मनुस्मृती) कर्मकांडे आचरणात आणणारे समाज अर्थात् शरीराचा आरंभ ऋतुदानाने आहेत. ते सर्व अवैदिक म्हणजे वेदातील (गर्भाधान संस्काराने) होतो आणि अंत सिद्धांत, तत्त्वे, विचार यांना न मानता स्मशानात (दाहसंस्काराने) होतो. मन मानेल तसे वागणारे आहेत. या यजुर्वेदात 'भस्मान्तं शरीरम्। (४०/ पौराणिक आचारविचारांचा प्रभाव शुद्ध १५)' असे म्हटले आहे. अर्थात् सनातन वैदिक धर्माचे अनुयायी शरीराची सत्ता (अस्तित्व) भस्म असलेल्या आर्यसमाजीयांवरही पडलेला होण्यापर्यंतच आहे. हा संस्कार दिसतोय. मृतांशी संबंधित केल्या आत्म्यासाठी नसून मृत शरीरासाठी जाणाऱ्या बऱ्याच पौराणिक गोष्टी आहे. मृत शरीर सडून दुर्गंधी पसरू आर्यसमाजीही आचरणात आणतात. तसे नये, म्हणून त्याला शक्यतो लवकर होऊ नये, अंत्येष्टीचे वैदिक स्वरूप कळावे, जाळले जाते. निरर्थक पौराणिक कर्मकांडे त्यांनी

मृत्यू झाल्यापासून दाहसंस्कार टाळावीत, यासाठी हा लेखनप्रपंच! करेपर्यंत व नंतरही मृताविषयी केल्या १)निधनाचे सूचना-फलक : जाणाऱ्या कर्मामध्ये वेगवेगळे मत, पंथ, आजकाल व्यक्तीचे निधन संप्रदाय, जाती, प्रांत यांच्यात भिन्नता झाल्यावर लोकांना माहित होण्यासाठी आढळते. आर्यसमाज हा वेदांतील थोड्याच वेळात त्यांच्या नावासह व

छायाचित्रासह निधनाचा दिनांक, वेळ, अंत्येष्टीचे ठिकाण, भावपूर्ण श्रद्धांजली इत्यादींचा उल्लेख असलेले लहान-मोठे सूचना-फलक (डिजिटल बॅनरच्या फ्रेम) घराबाहेर, दाराजवळ व मोक्याच्या चार-दोन ठिकाणी लावले जातात. असे फलक अवश्य लावावेत. मात्र त्यावर हार घालू नयेत अथवा हार घातलेले छायाचित्र बनवू नये. मूर्तीला किंवा चित्राला हार घालणे म्हणजे एक प्रकारे मूर्तिपूजा केल्यासारखेच आहे. म्हणून पुष्पमाला घालू नये.

२) मृताजवळ मंत्रपठन, भजन इत्यादी करणे :-

ही प्रथा उत्तर भारतात जास्त आहे. महाराष्ट्रातच क्वचितच मृताजवळ मंत्र, श्लोकपठण वा भजन केले जाते. व्यक्तीला मृत्युबद्दल पूर्वाभास होऊ लागला आणि मरणासन्न व्यक्तीची श्रवणशक्ती काम करत असेल तर वेदमंत्र, श्लोक, भजन इत्यादी म्हणणे लाभदायक आहे. त्यामुळे व्यक्तीच्या मनावर उत्तम संस्कार पडून त्याला भौतिक शरीर त्याग करताना त्रास होत नाही. परंतु प्राण निघून गेल्यावर त्या शरीराजवळ बसून मंत्रादीचे पठण करणे योग्य नाही. कारण प्रिय व्यक्तीच्या निधनामुळे नातलगामध्ये हृदय

पिळवटून टाकणारा आक्रोश, रडारड, दुःख, खिन्नता, उदासी असे वातावरण असते. म्हणून अशा वातावरणात मंत्रपठण करणे निरर्थक आहे.

३) मृतांचे दर्शन घेणे :

मृत्यूनंतर त्या व्यक्तीला भिंतीला टेकवून बसविले जाते. तसेच कपाळावर एक रुपयाचे नाणे चिकटवले जाते. येणारे लोक त्याचे दर्शन घेतात. अर्थात पाया पडतात. 'येथे दर्शन घेणे म्हणजे पाहणे' असा अर्थ अभिप्रेत आहे. चरणस्पर्श करणे नव्हे. तसेच काहीजण तिरडीवरील प्रेताचे किंवा चितेचेही दर्शन घेतात, नमस्कार करतात. मात्र या सर्व गोष्टी व्यर्थ आहेत. कपाळावर नाणे चिकटवणेही निरर्थक आहे. जिवंत व्यक्तीचे चरणस्पर्श, नमस्कार करणे किंवा पाया पडणे योग्य आहे. मृत व्यक्तीला शेवटचे डोळे भरून पाहून घेणे हे येथे महत्वाचे आहे, पाया पडणे नव्हे.

४) मृताला स्नान घालणे :

मृताला साबण लावून आंघोळ घालणे, चंदनादी सुगंधी द्रव्याचा लेप देणे, नवीन वस्त्रे नेसविणे आवश्यक आहे. मात्र दुर्घटनेत मृत्यु झाला असेल, शरीरावयांची मोडतोड झाली असेल, प्रेताची चिरफाड झाली असेल, दुर्घर

त्वचारोग झाला असेल तर स्नान घालू नये. आहे त्या कपड्यानिशी दहन करावे.

५) मृताला हार घालून ओवाळणे, आरती करणे :

ह्या क्रियाही निरर्थक आहेत, हारतुरे, मानसन्मान, स्वागतसत्कार या गोष्टी जिवंत व्यक्तीशी संबंधित आहेत, मृतांशी नाहीत. म्हणून असे करू नये.

६) प्रेतावर फुले वाहणे, पुष्पमाला ठेवणे :

तिरडीवर प्रेत बांधल्यानंतर मृत व्यक्तीच्या आदराप्रीत्यर्थ बरेच नातलग, आप्तेष्ट, संस्था संघटनांचे प्रमुख, प्रतिनिधी प्रेतावर फुले वाहतात किंवा पुष्पमाला ठेवतात. ही सुद्धा एक जडपूजाच आहे. प्रेतापासून निघणाऱ्या दुर्गंधीची तीव्रता कांहीशी कमी व्हावी, म्हणून हार ठेवले जातात, असाही एक तर्क मांडला जातो. यात काही प्रमाणात तथ्य असले, तरी यामागे अंधश्रद्धेचा भाग अधिक आहे. श्रद्धांजलीच्या वेळी किंवा मृताच्या कुटुंबीयांचे सांत्वन करतांना, भाषणातून, बोलण्यातून मृताविषयीचा आदरभाव व्यक्त करता येतो. शासकीय स्तरावरून स्वातंत्र्यसैनिकांच्या किंवा महनीय व्यक्तींच्या सन्मानार्थ त्यांच्या प्रेतावर, चितेवर किंवा समाधीवर पुष्पचक्र

वाहिले जाते. हा शासनाच्या तद्विषयक आचारसंहितेचा एक भाग आहे. यात सामान्य नागरिकांनी ढवळाढवळ करू नये. एरव्ही सर्वसामान्यांनी प्रेतावर हार-फुले वाहणे संयुक्तिक वाटत नाही.

७) प्रेत वाहून नेताना डोक्याची बाजू मागे असावी की पुढे ?

तिरडीवरून प्रेत वाहून नेताना डोक्याकडील बाजू पुढे असावी की मागे ? या बाबतीतही संभ्रम असतो. डोके कोणत्याही बाजूकडे असे तरी फरक पडत नाही. मात्र प्रेताचा चेहरा उघडा असल्यामुळे त्यावर सारख्या माशा घोंघावतात. त्या फडक्याने वाराव्या लागतात. डोक्याकडील बाजू मागे असल्यास ही क्रिया करणे सोयीचे होते. तसे तर आजकाल प्रेत वाहून नेण्यासाठी वैकुंठरथाचा (शववाहिनी) वापर केला जातो. म्हणून ही समस्या तितकी राहत नाही.

८) प्रेतावर मुसुरे किंवा नाणी उधळणे :

अनेकदा प्रेतयात्रा जाताना प्रेतावर मुसुरे किंवा नाणी उधळतात. असे करणेही योग्य नाही. कारण मुसुरे पायदळी पडून तुडविली जातात. खाण्याचा पदार्थ मातीत मिसळतो. नाणी

उधळून श्रीमंतीचे प्रदर्शन करणेही बरोबर नाही. पडलेली नाणी जमा करण्यासाठी पोरे-ठोरे किंवा काही प्रौढही खाली वाकतात. त्यामुळे प्रेतयात्रेत अव्यवस्था निर्माण होऊन गोंधळ माजतो. अशी नाणी उधळण्यापेक्षा एखाद्या गुरुकुलास, अनाथाश्रमास किंवा विधवाश्रमास त्या व्यक्तीच्या नावे भरघोस मदत करावी.

१) शवयात्रेत मंत्रपठण करावे काय ?

त्या-त्या मत-पंथाच्या व्यक्ती शवयात्रेत आपल्या उपास्य देवतेशी संबंधीत 'रामनाम सत्य है' इ. मंत्र व वचने म्हणतात. अशा प्रकारच्या वाक्यांचा उच्चार करण्यास हरकत नाही. मात्र 'राम नाम सत्य है' ऐवजी 'ओ३म् नाम सत्य है', 'ओ३म् नाम अमर है', 'आत्मा नित्य है - शरीर अनित्य है', 'आत्मा अमर है- शरीर नश्वर है', 'ओ३म् स्मर, कृतम् स्मर, ओ३म् कृतो स्मर, ओ३म् खं ब्रह्म' इत्यादी वेदवचने शांतपणे म्हणत जावे. या प्रसंगी ईश्वरस्तुतीचे मंत्र किंवा इतर वेदमंत्रांचेही पठण केले जाऊ शकते.

१०) विसावा रुढी पाळावी काय ?

स्मशानाजवळ गेल्यावर स्मशानात जाण्यापूर्वी तिरडी खाली ठेवून ती वरील मृतास झाकलेल्या कापडातील

ज्वारी जमिनीवर ठेवतात. ही विसाव्याची रुढी पाळण्याचे कांहीही कारण नाही. ही परंपरा चुकीची आहे.

११) चितेवर प्रेताचे डोके कोणत्या दिशेस असावे ?

चितेवर प्रेताचे डोके उत्तर, ईशान्य किंवा वायव्य दिशेकडे असावे. कारण पृथ्वीचा उत्तर ध्रुव हा विद्युतपुंज आहे. त्याचप्रमाणे शरीरात डोक्याच्या भागात विद्युत असते. शरीरातील विद्युत मृत शरीराला सोडून आपल्या मूळ स्त्रोताकडे- उत्तर ध्रुवाकडे - जात असते. तिला सहजपणे तेथे जाता यावे यासाठी उत्तरेकडे डोके असावे.

१२) चितेवरील मृतास पाणी पाजणे -

चितेवरील मृतास पाणी पाजणे, त्याच्या तोंडात तुळशीची पाने ठेवणे किंवा सोने ठेवणे हे सर्व निरर्थक आहे. शरीरातून जीवात्मा निघून गेल्यावर मृत शरीर कसलीही क्रिया करित नाही. मग पाणी कोणाला पाजायचे ? ते पाणी पोटात न जाता तोंडातून, ओठातून खाली चितेवरच पडते. माणूस जिवंत असतानाच त्याला उत्तमोत्तम पदार्थ खाऊ- पिऊ घातले पाहिजेत. तो मेल्यावर त्याच्या तोंडात कोणताही पदार्थ

टाकणे, हे कोणत्याही कसोटीवर सार्थक सिद्ध होत नाही.

१३) पाण्याचे मडके खांद्यावर घेऊन चितेस प्रदक्षिणा घालणे -

ओल्या कपड्याने तिरडीपुढे शिकाळी घेऊन चालणे, पाण्याचे मडके खांद्यावर घेऊन चितेभोवती तीन प्रदक्षिणा घालणे, तिसरी परिक्रमा पूर्ण होताच मागे न पाहता पुढे उत्तरेकडे तोंड करून उभ्यानेच मडके पाठीमागे टाकणे व बोंब मारणे ह्या क्रियांनासुद्धा कसलाही शास्त्रीय आधार नाही. म्हणून या क्रिया करू नयेत.

१४) चितेस अग्नी देणाऱ्याने मुंडण करणे -

चितेस अग्नी देणाऱ्याने (पती, मुलगा, भाऊ, पुतण्या इत्यादी) मुंडण करू नये किंवा ओलेल्याने अग्नी देऊ नये. तसेच सुतकही पाळू नये. डोक्यास फडके वगैरे बांधू नये. हे सर्व निरर्थक आहे.

१५) स्त्रियांनी खांदा देणे व चितेस अग्नी देणे -

या गोष्टींना पौराणिक समाज मान्यता देत नाही. परंतु वेदादिशास्त्रात याचा कोठेही निषेध नाही. अनेकांना मुलगा नसतो, मुलीच असतात.

अशावेळी मुलींनीच त्यांच्या चितेला अग्नी दिल्याची अनेक उदाहरणे आहेत. शिवाय बऱ्याच वेळा महिलांनीही तिरडीला खांदा दिलेला आहे.

१६) दिव्याभोवती हरळी ओवाळणे -

मृताच्या घरी मृत्यू झालेल्या जागेवर एक पाण्याचा तांब्या भरून ठेवतात. जवळच एक दिवाही लावलेला असतो. चितेला अग्नी देऊन लोक मृताच्या घरी येतात व तांब्याच्या पाण्यात हरळी बुडवून ती दिव्याभोवती फिरवून खाली ठेवतात व दिव्याचे दर्शन घेतात. इतर क्रियांप्रमाणेच ही क्रियासुद्धा वायफळ आहे. वास्तविक अशा वेळी तेथे स्वस्तिवाचन व शांतिकरणाच्या मंत्रांनी हवन करावे, असे महर्षी दयानंदांनी संस्कारविधीत लिहिले आहे. पुढेही दुखवटा संपेपर्यंत दररोज हवन करावे. त्यामुळे घरातील मृताशी संबंधित अशुद्ध वायू निघून जाऊन शुद्ध वायू प्रवेश करतो. ही एक प्रकारे घराची शुद्धीच आहे.

१७) राख भरण्याची क्रिया (अस्थिसंचयन) -

मृत्यू झाल्याच्या तिसऱ्या दिवशी राख सावडण्याचा कार्यक्रम होतो. या

दिवशी राखेचे तीन ढिगारे केले जातात. राखेतील हाडे वेगळी काढून मडक्यात भरली जातात व राख नदीच्या पाण्यात किंवा तेथेच स्मशानात टाकतात. नंतर चितेच्या जागेवर तीन दगड मांडून त्यावर पाणी, हळदी-कुंकू वाहून पूजा करतात. चहा, दुध, बिस्कीटे, नैवेद्य इत्यादी पदार्थ तेथे ठेवतात. सर्वजण त्या दगडाचे दर्शन घेतात. शेवटी थोडे लांब उभे राहून ते पदार्थ गायीने किंवा कावळ्याने खावेत अशी अपेक्षा करतात.

वरील क्रियांपैकी फक्त राख गोळा करण्याची, सावडण्याची क्रिया महत्त्वाची आहे. इतर क्रिया करू नयेत. त्या सर्व निरर्थक आहे. दोन-तीन पोत्यांमध्ये हाडांसह राख भरून ती शेतामध्ये विखरून टाकावी. यजुर्वेदात 'पृथिवीं भस्मनाऽपृण' (६/२१) असे म्हटले आहे. म्हणजे तू आपल्या शरीर भस्माने (चितेच्या राखेने) ही पृथ्वी (भूमी, जमीन) भरून टाक. अर्थात पृथ्वीवर तुझी राखच शिल्लक राहणार आहे. याबरोबरच गंगेला जाऊन हाडे उजळणे इत्यादी क्रियाही करू नयेत. यामुळे नदीचे पाणी प्रदुषित होते. राख भरल्यानंतर मृताविषयी कोणतेही कर्तव्यकर्म शिल्लक राहत नाही.

१८) अंतिम शोक दिवस -

मृत्यू झाल्यापासून साधारणपणे १२-१३ दिवसांपर्यंत दुखवटा (शोक) पाळला जातो. यालाच 'सुतक' असे म्हणतात. विविध जाती-जमातीनुसार व मतपंथानुसार हा कालावधी वेगवेगळा असतो. चौथ्या, सातव्या, दहाव्या किंवा बाराव्या-तेराव्या दिवसांपर्यंत हा दुखवटा पाळला जातो. ही लोकरुढी आहे. याला कसलाही शास्त्रीय आधार नाही. आजच्या काळात अधिक दिवस दुखवटा पाळणे अडचणीचे आहे. जास्त दिवस उद्योग-धंदा बंद ठेवता येत नाही. म्हणून राखेच्या दिवसापर्यंतच शोक पाळणे ठीक राहिल. त्या दिवशीच अंतिम शोकदिवसविधी करून दुखवटा सोडावा. पं.मदनमोहन विद्यासागर लिखित 'संस्कारसमुच्चय' मध्ये अंत्येष्टी संस्कारानंतर हा विधी दिलेला आहे.

१९) मृताच्या नावाने गोड जेवण द्यावे काय ?

सर्वसाधारणपणे दहाव्या-बाराव्या दिवशी गोड जेवणाचा कार्यक्रम केला जातो. लिंगायतांमध्ये चौथ्या दिवशीच हा विधी करतात. वास्तविक मृताच्या नावाने गोड जेवण द्यावे असा उल्लेख संस्कारविधीत नाही.

संस्कारविधीचे भाष्यकार पं.भीमसेन शर्मा, पं.आत्माराम अमृतसरी आणि डॉ.सत्यव्रत सिद्धांतालंकार यांनी आपल्या 'संस्कारचंद्रिका' या ग्रंथामध्ये तसेच पं.मदनमोहन विद्यासागर यांनीही गोडजेवण देण्याबाबत विरोध दर्शविला आहे. गोड जेवणासाठी खर्च होणारी रक्कम वाचवून संस्कारविधीत सांगितल्याप्रमाणे अंत्येष्टी संस्कारात शरीराच्या वजनाबरोबर तूप, वजनाबरोबर चंदन इत्यादी सामग्री वापरता येते. तसेच सधन परिवारांनी मृताच्या स्मृतीप्रीत्यर्थ वेदविद्या, वेदोक्त धर्मप्रचार, अनाथपालन इत्यादीसाठी अधिकात अधिक धन खर्च करणे, मृताच्या नावे विशिष्ट कार्यासाठी स्थिरनिधी स्थापन करणे, हे चांगलेच कार्य आहे.

२०) अंतिम शोकदिवस विधी कसा करावा ?

हा विधी 'संस्कारसमुच्चय' ग्रंथात सांगितल्याप्रमाणे साध्या पद्धतीने यज्ञ करून करावा. कसल्याही प्रकारचे गोड जेवण देऊ नये. केवळ जलपानाची (दूध, शरबत इ.) सोय करावी. पहिल्या तीन-चार दिवसात दुःखाची तीव्रता अधिक असल्यामुळे गोड पदार्थ खाणे व खाऊ घालणे प्रशस्त वाटत नाही.

याच दिवशी मृताच्या ज्येष्ठ पुत्राचा उत्तराधिकारग्रहण विधी केला जातो हा विधीही वरील ग्रंथातच दिला आहे.

२१) वर्षश्राद्ध करावे काय ?

वर्षश्राद्ध घालणे, ब्राह्मणांस दान-दक्षिणा देणे, वैतरणी नदी पोहून जाण्यासाठी गाय देणे, पूर्वजांच्या नावाने कोण्या नातलगास जेऊ घालणे इत्यादी गोष्टी करू नयेत. केवळ यज्ञ करून साध्या पद्धतीने स्मृतीदिवस साजरा करावा. पूर्वजांची किर्ती आठवून त्याप्रमाणे आचरण करण्याचा प्रयत्न करावा. अशा वेळी मृताच्या फोटोस हार घालू नये. या प्रमाणे आर्यजनांनी मृतांशी संबंधित पौराणिक गोष्टी न करता वैदिक पद्धतीने महर्षी दयानंदांनी संस्कारविधीत सांगितल्याप्रमाणे हा अंत्येष्टीविधी करावा. इति ओ३म् ।

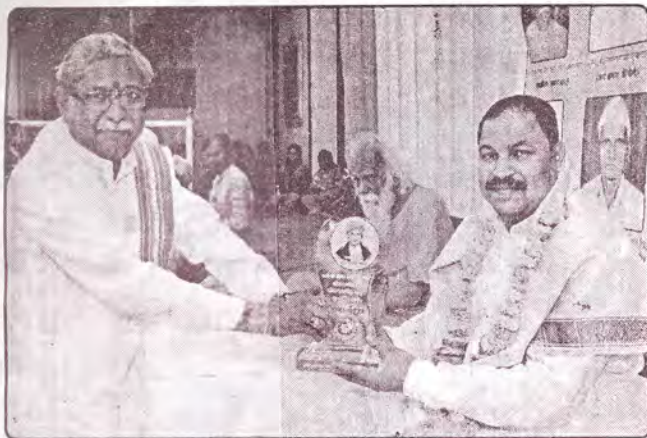
- सुरभारती स्वाध्याय केन्द्रम्

सीतारामनगर, लातूर

भ्रमणध्वनी - ९६२३८४२२४०



‘ज्येष्ठ आर्यसेवक गौरव समारोह’ में मान्यवरों का सम्मान



हरिद्वार से
आमंत्रित वैदिक
विद्वान्
प्रो.डॉ.दीनदयालजी
वेदालंकार का
सम्मान करते हुए
सभा के उपप्रधान
श्री दयारामजी
बसैये बंधु ।

आमंत्रित वैदिक
भजनोपदेशक
पं.भूपेन्द्रसिंहजी
आर्य (अजमेर)का
सम्मान करते हुए
उपप्रधान श्री
राजेन्द्रजी दिवे ।



भजनोपदेशक
सहयागी श्री
पं.लेखारामजी शर्मा
का सम्मान करने
हुए सभा के अध्यक्ष
प्रा.श्री देवदत्तजी
तुंगार।

ज्येष्ठ आर्यसेवक गौरव समारोह (मार्च २०१६) की चित्रमय झलकियाँ



प्रेषक

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,

आर्य समाज, परली वैजनाथ,

जिला बीड (महाराष्ट्र)-४३१५१५

सेवा में,

श्री.

Reg.No.MAHBIL/2007/7493*
Postal No.L/Beed/18/2015-17

इस माह का रंगीन मुखपृष्ठ : श्री अनुप भिकुलालजी भन्साली, परली वै. के सौजन्य से

C: 0 98 23 18 38 38

E: dwarkadigital@gmail.com

291/1, Subhash Chowk,
PARLI VAIJNATH-431 515. (MS)

something
beyond
design

dwarka
digital graphix

digital printing flex printing offset printing